Annual Susbscription fee 100/ 18th August 2015

ओ३म्

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

स्वतन्त्रता दिवस पर आजादी के दिवाने, देश पर मर मिटने वाले शहीदों को शत-शत प्रणाम

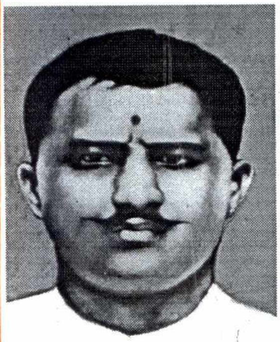

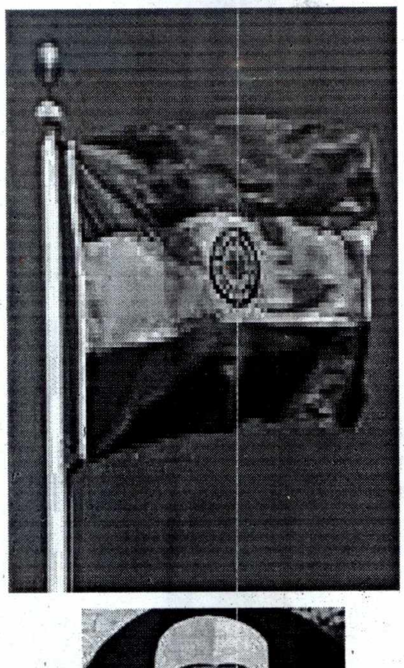

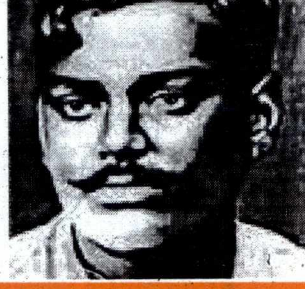

భారతరత్న డా॥ అబ్దుల్ కలామ్ గారికి ఆఖరి సలామ్

అబ్దుల్ కలాం మాట..

- యువతకు ముఖ్యంగా నేనిచ్చే సందేశం ఏంటంటే.. భిన్నంగా ఆలోచించే సాహసం చేయండి. ఆవిష్కరణల్లో సాహసం చూపండి. ఎవరూ వెళ్లని దారిలో వెళ్లండి. అసాధ్యమనుకొనే దానిని కనిపెట్టేందుకు సాహసం చేయండి. సమస్యలను జయించండి. విజయాన్ని ఒడిసి పట్టండి. ఈ గొప్ప లక్షణాలను యువత తప్పక అలవర్చుకోవాలి.
- నా దృష్టిలో నాయకుడంటే లక్ష్యమున్నవాడు. అభిరుచి ఉన్నవాడు. సమస్యను చూసి భయపడకుండా దానిని ఎలా ఓడించాలో తెలిసినవాడు. పూర్తి చిత్తశుద్ధితో పనిచేయటం నాయకుడికి ఉండాల్సిన అత్యంత ముఖ్య లక్షణం.
- గొప్ప వ్యక్తులకు మతమంటే స్నేహాన్ని పెంపొందించేది. అల్పులకు అది కొట్లాడుకొనేందుకు ఒక సాధనం.
- ఒకదేశం అవినీతి రహితం కావాలన్నా, గొప్ప మేధస్సులతో నిండాలన్నా సమాజంలో ముగ్గురివల్లనే సాధ్యమని నేను బలంగా నమ్ముతాను. వారే తల్లి, తండ్రి, గురువు.
- ప్రస్తుతం నిజమైన వైజ్ఞానిక కార్యకలాపాలన్నీ ఇంగ్లిష్‌లోనే కొనసాగుతున్నందున మనకు ఇంగ్లిష్ తప్పనిసరి. మన భాషల్లో నిజమైన వైజ్ఞానిక కార్యకలాపాలు మొదలవ్వటానికి మరో రెండు దశాబ్దాలు పడుతుందని నేను భావిస్తున్నాను. అప్పుడు మనం కూడా జపనీస్‌లాగా ముందుకు సాగవచ్చు.
- మనిషికి కష్టాలూ అవసరమే.. ఎందుకంటే కష్టాలు ఉన్నప్పుడే విజయాలను ఆస్వాదించగలడు.
- విద్యార్థికి ఉండవల్సిన అతిముఖ్య లక్షణాల్లో ఒకటి ప్రశ్నించటం. విద్యార్థులారా ప్రశ్నించడం నేర్చుకోండి.
- మనం స్వేచ్ఛగా లేకపోతే.. ఎవరూ మనల్ని గౌరవించరు.
- కవిత్వమనేది అత్యున్నతమైన సంతోషం నుంచి లేదా అత్యంత విచారం నుంచే వస్తుంది.

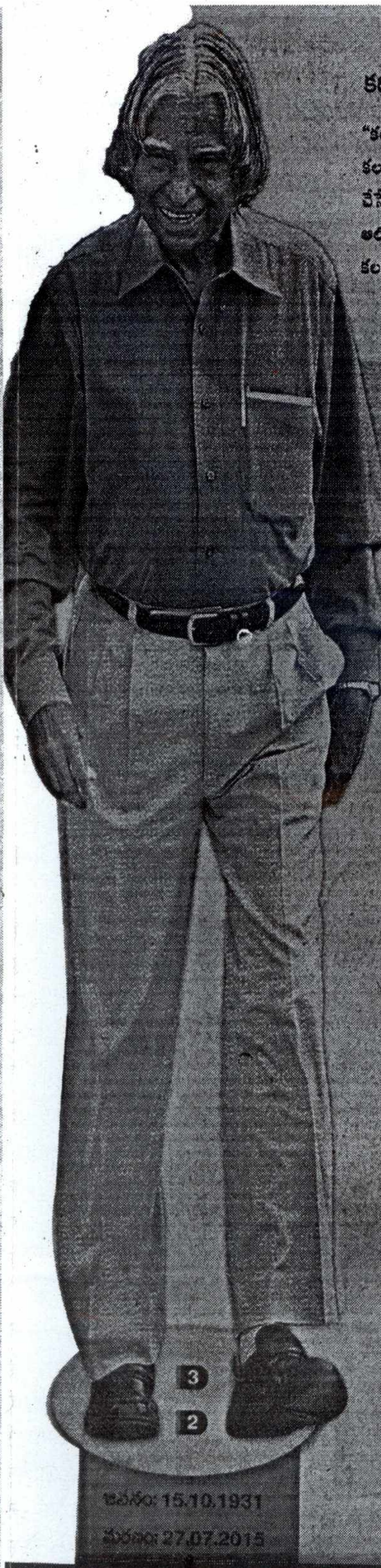

కరిగిపోనిది మీ 'కల'

"కల అంటే నిద్రలో కనిపించేది కాదు. కల అంటే... నిన్ను నిద్రపోనివ్వకుండా చేసేది. కల ఆలోచనలను రేకెత్తిస్తుంది. ఆలోచన మనల్ని కార్యోన్ముఖులను చేస్తుంది. కలలు కనండి. వాటిని సాకారం చేసుకోండి!"

- అబ్దుల్ కలాం

భారతీయుడు

అతడు..

ఏండు 84 ఏళ్ల నవ యువకుడు..
పిల్లల్లో పిల్లవాడుగా కలిసిన పెద్ద మనిషి..
యువ స్వప్నం స్వాగతించిన సాహసికుడు..

అతడు..

పల్లె నుంచి పైకెగిరి వచ్చిన పారమార్థికుడు..
ఓటమినే గెలుపుగా తీర్చిదిద్దిన సాధకుడు..
పేదల ఆరోగ్యానికి రక్షణ ఇచ్చిన శాస్త్రవేత్త..

అతడు..

మార్మికుడుగా కనిపించిన భోళా శంకరుడు..
భీకర క్షిపణులను సృష్టి చేసిన వైదికుడు..
ఎడారిలో అణ్వస్త్రం పేల్చిన స్మైలింగ్ బుద్ధ..

అతడు..

పనిలోనే విశ్రాంతి వెతుక్కున్న నిత్య శ్రామికుడు. రామేశ్వరం నుంచి రాష్ట్రపతి భవన్‌దాకా రాజ్‌పథ్‌పై దూసుకొచ్చిన రాకెట్. శత్రువుల్ని ఓడించడంలో... ఆయన తయారు చేసిన మిసైల్ కన్నా.. ఆయన నవ్వు పవర్‌ఫుల్.

అతడు..

గొప్ప ప్రొఫెసర్.. గొప్ప శాస్త్రవేత్త..
గొప్ప వక్త... గొప్ప నాయకుడు..
గొప్ప స్వాప్నికుడు.. గొప్ప ప్రేమికుడు..
అతి సామాన్యుడిగా కనిపించే అసామాన్యుడు. అనితర సాధ్యుడు.
అన్నింటికంటే మించి ఆయన దేశభక్తుడు!

భరతమాత సేవకే తనువంతా అంకితం చేసిన భారతరత్న, మాజీ రాష్ట్రపతి అబ్దుల్ కలాం ఇకలేరు!

నిత్య విద్యార్థి.. నిరంతర బోధకుడు. అయిన కలాం.. తానెంతో ప్రేమించే విద్యాలయంలోనే తుదిశ్వాస విడిచారు!!

"वेदोक्त ईश्वर की मान्यता"

-अभिमन्यु कुमार खुल्लर, ग्वालियर म.प्र.

महर्षि दयानन्द इस रोग से मुक्त थे कि विदेश में जाकर धर्म प्रचार से उनकी अन्र्तराष्ट्रीय छवि बनेगा । अन्तर्राष्ट्रीय छवि बनने के इस लाभ की कल्पना को उन्होंने अपने पास भी नहीं फटकने दिया कि वह भारत में और अधिक पूज्यनीय बन जावेंगे । वे इस रोग से भी मुक्त ये कि अंग्रेजी जानकर, उसमें पर्याप्त भाषण कला का निखार कर, जनसाधारण ही नहीं भारत के बौद्धिक जगत् में भी उनकी धाक जम जाएगी ।

पूजनीय बनने व बौद्धिक जगत् में धाक जमाने का लालच उन्हें स्पर्श भी नहीं कर पाया था । तत्कालीन सन्त समाज प्रमुख स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती (वाराणसी) ने कहा था कि दयानन्द ! तुम मूर्ति पूजा का विरोध छोड़ दो, हम तुम्हें विष्णु का अवतार घोषित कर, भारत भर में पूजनीय बनवा देंगे । महर्षि 'नकटा सम्प्रदाय' में शामिल होने को तैयार नहीं हुए । नकटा सम्प्रदाय का अभिप्राय समझने के लिये महर्षि का जीवल-चरित पढ़ने का कष्ट करें । ब्रह्मसमाज के प्रमुख नेता आचार्य केशवचन्द्र ने महर्षि से कहा-काश ! आप अंग्रेजी जानते और मेरे साथ इंग्लैण्ड चलते । आशय उपरोक्त वर्णित उद्देश्यों के अतिरिक्त क्या हो सकता है ? महर्षि ने उत्तर दिया - काश, आप अपनी भाषा में प्रवचन करते तो ज्यादा जनता को समझ में आता पर आप तो उस भाषा (अंग्रेजी) प्रवचन करते हैं जो देश की जनता समझती ही नहीं । सुविज्ञ पाठक जानते हैं कि महर्षि अंग्रेजी का अभ्यास कर रहे थे । बम्बई प्रवास में वह प्रतिदिन अंग्रेजी अखबार सुनते थे । उनका अंग्रेजी का अभ्यास मैक्समूलर जैसे विदेशी विद्वानों को सही वेदार्य समझाने के अतिरिक्त और क्या हो सकता या, जिन्हें वेदार्य पद्धति का भ्रमित ज्ञान या - महीधर और सायण आदि भाष्यकारों की कृपा से । भारत का चतुर्दिक, सम्यक विकास उनका प्रथम और अंतिम लक्ष्य था । जैसे जैसे वह प्रचार कार्यक्रम में धंसते चले गये उनका इस लक्ष्यप्राप्ति के लिये आग्रह और प्रबल होता चला गया । यहाँ तक कि व्यक्तिगत मोक्ष, जिसके लिये उन्होंने गृह त्याग किया था, को भी तिलांजलि दे दी थी । इतना तो लेख की भूमिका समझ लीजिए । बैताल की तरह महर्षि कन्धे पर, मन-मस्तिष्क पर सवार रहते हैं । लेख कहाँ से प्रारम्भ करने का मन बनाया था, पर हुआ महर्षि से, यही होना था और यही हुआ भी ।

पाँच-छैः महीने पूर्व एक वेद मंत्र दृष्टि में आया था । उसके बाद ध्यान से उत्तर गया । संस्कृत पढ़ी नहीं है पर विद्वानों की हिन्दी में व्याख्याएं पढ़ लेता हूँ, सुन लेता हूँ । कुछ दिनों से उसे ढूँढ़ने का प्रयास कर रहा था, पर सफलता नहीं मिली । श्रद्धेय शिवनारायण उपाध्याय जी (कोटा) को समस्या बताई । उन्होंने वेदमंत्र ही नहीं, उस पर एक लेख लिख कर भेज दिया । मेरे मस्तिष्क में यह बात बार बार कौंध जाती थी कि इस मंत्र के जानकार होते हुए भी पौराणिक विद्वान किस तरह विभिन्न ईश्वरों के निर्माण करने में संलग्न रहे और आज भी हैं । नए ईश्वर गढ़ो, उनके पूजन-अर्चन से प्राप्त लाभों की मार्केटिंग करने के लिये सेल्समेन लगा दो । हलवे-मांडे की दीर्घकालीन व्यवस्था सुनिश्चित है । वैष्णोदेवी, गायत्री माता, शिरड़ी के साँई बाबा, पुट्टपार्थी के साँईबाबा भगवान सब यही तो हैं । ज्यादा कठिन, गूढ़ संस्कृत नहीं है इसलिये मैं मंत्र को प्रस्तुत करता हूँ -

यत एतं देवमेकवृतं वेद । १३.४.१५
न द्वितीयो, न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते । १३.४.१६
न पञ्चमों न षष्टः सप्तमो नाप्युच्यते । १३.४.१७
ना अष्टमों न नवमो दशमो नाप्युच्यते । १३.४.१८

मुझ जैसे केवल हिन्दी जानने वालों के मानसिक प्रवाह को बनाए रखने के लिये मैंने प्रत्येक मंत्र के अंतिम पद यत एतं वेदमेकवृतं वेद का लोपकर दिया है ।

श्रद्धेय उपाध्याय जी के अर्थ को यथावत् रखता हूँ । वह अकेला वर्तमान् न दूसरा, न तीसरा व चौथा कहा जाता है । वह न पाँचवा न छठां, न सातवां कहा जाता है । वह न आठवां, न नवां, न दसवां ही कहा जाता है । एक से लेकर दस तक की गिनती में समस्त संख्याऐं सम्मिलित हो गई । एक से दस तक मस्तिष्क पर हथौड़ा मार मार कर वेद कह रहा है कि वह एक ही है । क्या अब भी समझ में नहीं आता कि ईश्वर केवल एक ही है । इतने शक्तिशाली ढंग से ईश्वर के एकत्व का महिमा मण्डन कौनसा धर्म करता है - इस्लाम् ? वहाँ तो रसूललिल्लाह मोहम्मद पैगम्बर जुड़े हुए हैं उनको पारकर, बायपास कर सीधे अल्लाह के पास नहीं पहुँचा नहीं जा सकता । ईसाईयत ? कहाँ ईसा मसीह के माध्यम से ही पहुँच है । इनकी हमें इतनी ज्यादा चिन्ता नहीं, जितनी भारत में हजारों और नित नए जन्म लेकर परमात्माओं की संख्या वृद्धि करने वालों की है । समस्त भारतीयों को भी हाल ही में मालूम पड़ गया कि बंगला देश में प्रख्यात् 'ढाकेश्वरी' मंदिर है, अब देखना धार्मिक यात्राओं का प्रवाह प्रारम्भ हो जावेगा । यहाँ के मंदिरों, कब्रगाहों से जिनको लाभ नहीं हुआ वे "ढाकेश्वरी" मंदिर जाएगें ही ।

महर्षि ने दिल्ली सरकार के समय एक धार्मिक दरबार भी लगाया था । समस्त उपस्थित धर्माचार्यो से प्रबल आग्रह किया था कि धर्म के मूल सिद्धांतों पर जिनमें मतभेद नहीं है, हम एक धर्म स्वीकार कर लें । विरोधी तत्वों को भविष्य में समाधान के लिये छोड़ दें तो देशोन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जावेगा । यह नहीं हुआ, होना भी नहीं था । क्योंकि एक वेदोक्त ईश्वर की मान्यता होने से उनके फूस के महल ढ़ह जाते । आचार्य केशवचन्द्र सेन ने तो विफलता का ठीकरा ही महर्षि के सिर पर फोड़ दिया । महर्षि वेद को अपौरुषेय मानना छोड़ दे तो वे तैयार हैं । महर्षि ने तो देश की एकता के लिये सुदृढ आधार रखने के लिये जिन तीन तत्वों का उल्लेख किया है, उनमें धर्म सबसे प्रथम है । देश उनके समय भी पूर्णतया धार्मिक या और आज भी है । कौन धार्मिक एकता के लिये प्रयत्न करे ?

पौराणिक विद्वान, साधु संत, मठाधीश, क्या भूलकर भी चाहेंगे कि तिरुपति बालाजी के भगवान्, शिरड़ी के सांईबाबा वाले, पुट्पार्थी के साँई बाबा वाले भगवान, सोमनाथ जी, द्वारिकाजी, पुरी, उज्जैन वाले भगवान सब मिलकर एक निराकार, सर्वशक्तिमान भगवान में समा जावें ? बिल्कुल असंभव ? मुझे आगामी सैकड़ों-हजारों वर्षो तक संभव नहीं दिखता । इनकी जड़ों में मठा डालने वाला दयानंद तो १८८३ में ५९ वर्ष की आयु में ही चला गया । पहिला दयानंद महर्षि जैमिनी के पश्चात् छैः हजार वर्ष बाद आया था । दूसरा दयानंद प्रभु कब भेजेगा ? भेजेगा भी या नहीं कुछ पता नहीं ।

'धार्मिक अंधविष्वासों का कारण सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय न करना'

–मनमोहन कुमार आर्य देहरादून

अंधविश्वास को किसने जन्म दिया है? विचार करने पर ज्ञात होता है कि अविद्या और अज्ञान से अन्धविश्वास उत्पन्न होता है। अन्धविश्वास दूर करने का उपाय क्या है, इस पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि ज्ञान व विद्या से अन्धविश्वास दूर होते हैं। ज्ञान व अविद्या कहां मिलती है? इसका उत्तर है कि सदग्रन्थों का स्वाध्याय करने से ज्ञान व विद्या की प्राप्ति होती है। अतः अन्धविश्वास से बचने वा रक्षा के लिये सदग्रन्थों का स्वाध्याय आवश्यक है। सद्ग्रन्थ कौन से हैं और कौन से ग्रन्थ सद्ग्रन्थ नहीं है, इसका निर्धारण साधारण लोग नहीं कर सकते अपितु छल–कपट–स्वार्थ–अविद्या रहित शुद्ध हृदय वाले विद्वान ही कर सकते हैं। विद्वानों की अनेक श्रेणियां हैं। पुराण व अन्य मत–मतान्तरों के ग्रन्थों के अध्ययन से अज्ञान व अविद्या उत्पन्न होने से अन्धविश्वास बढ़ते हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम समाज व देश विदेश में होने वाली नाना घटनाओं में पाते रहते हैं। साधारण मनुष्यों के स्वाध्याय का सबसे उत्तम ग्रन्थ कौन सा है? इसका उत्तर है कि जिसमें अज्ञान, अविद्या व अन्धविश्वास से युक्त भ्रान्तिपूर्ण बातें न हों तथा इसके विपरीत ज्ञान व विद्या उत्पन्न करने वाली बातें हो उसे ही हम सद्ज्ञान युक्त ग्रन्थ की संज्ञा दे सकते हैं। ऐसे वेद, ज्योतिष, दर्शन, उपनिषद, स्मृति आदि अनेक ग्रन्थ हैं परन्तु संसार में सबसे उत्तम व सरल ग्रन्थ एकमात्र "सत्यार्थ प्रकाश" ही है।

प्रश्न किया जा सकता है कि सत्यार्थ प्रकाश ही अन्धविश्वासों से मुक्त ग्रन्थ है, इसका क्या प्रमाण है? इसका प्रथम उत्तर तो यह है कि यह एक सत्यान्वेषी महापुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती का लिखा हुआ ग्रन्थ है जिन्होंने अपना सारा जीवन सत्य की खोज, योग व ईश्वरोपासना तथा अध्ययन व अध्यापन में अर्पित किया तथा जो समाज, देश व मनुष्यमात्र सहित प्राणीमात्र के कल्याण की भावना से भरे हुए थे। यह महर्षि दयानन्द ने अपना सारा जीवन सच्चे ईश्वर, मष्त्यु से बचने के उपायों, धर्म, समाज, देशहित की सभी बातों की खोज में लगाया और वह उसमें सफल हुए थे। वह इस कार्य में इसलिए सफल हो सके कि उन्हें वेद और वैदिक व्याकरण के सच्चे गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती मिले जिनका सारा जीवन ही सत्य की खोज व भ्रान्तिपूर्ण विषयों से सम्बन्धित सत्य के निर्णय में व्यतीत हुआ था। दोनों गुरू शिष्य ने मिलकर 3 वर्ष तक सच्चे ईश्वर, जीवात्मा, प्रकषति के स्वरूप तथा धर्म कर्म विषयक सभी विषयों पर गम्भीरता से चिन्तन किया। उनका मार्गदर्शक ईश्वरीय ज्ञान वेद था। वेद ईश्वरीय ज्ञान कैसे है? इसका एक उत्तर तो यह है कि यह संसार की सबसे प्राचीनतम पुस्तक होने के साथ ही सषष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को सीधे ईश्वर से इसका ज्ञान मिला था। सषष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सषष्टि में बड़ी संख्या में युवा स्त्री–पुरुष उत्पन्न हुए थे। माता–पिता आरम्भ में होते नहीं हैं, अतः सषष्टिकर्त्ता ईश्वर बिना माता–पिता के अमैथुनी सषष्टि करता है जो अण्डज व जरायुज न होकर उद्भिज सषष्टि के अनुरूप होती है। इन उत्पन्न मनुष्यों को अपने जीवन के कर्तव्यों को जानने, समझने व करने के लिए भाषा सहित ज्ञान की आवश्यकता थी। ज्ञान व भाषा वर्तमान में सभी को माता–पिता व आचार्यों से मिलती है। सषष्टि के आरम्भ में यह तीनों ही नहीं थे। केवल एक चेतन सत्ता ईश्वर थी जिसने इस संसार को बनाया था। दूसरी कार्य प्रकषति वा सषष्टि थी जिससे यह संसार बना था परन्तु जड़ व ज्ञानहीन होने से यह मनुष्यों को ज्ञान देने में सर्वथा असमर्थ होती है।

यह संसार ज्ञान व शक्ति के समन्वय तथा तप–पुरूषार्थ का परिणाम है जिसमें प्रकृति की भूमिका उपादान कारण के रूप में होती है। संसार को बनाने हेतु जिस ज्ञान की आवश्यक थी उसमें सब सत्य विद्यायें सम्मिलित थी। संसार की विशालता को देखकर उस चेतन व ज्ञानवान सर्वज्ञ शक्ति की विशालता व सर्वव्यापकता के भी दर्शन होते हैं। ज्ञानवान व सर्वव्यापक होने से उस शक्ति ईश्वर को सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न मनुष्यों को ज्ञान देने में कोई कठिनाई नहीं थी। अतः उसने मनुष्यों की आत्माओं में अपने सर्वान्तर्यामी स्वरूप से प्रेरणा द्वारा ज्ञान को स्थापित कर दिया। उस ज्ञान के कारण मनुष्य परस्पर बोलने लगे व आपस में सभी प्रकार के व्यवहार होने आरम्भ हो गये। सृष्टि को बनाने वाला ईश्वर सर्वज्ञ अर्थात् सर्वज्ञानमय होने के कारण उसका दिया हुआ वेद भी सब सत्य विद्याओं से युक्त है। इसमें अज्ञान का लेश भी नहीं है। इन तथ्यों का साक्षात्कार विद्यासम्पन्न तथा योग सिद्ध विद्वान समाधि अवस्था में करते हैं। महर्षि दयानन्द ने भी वेद व ईश्वर में निहित सत्य ज्ञान का साक्षात्कार किया और उसके आधार पर ही उन्होंने 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ की रचना की। अपने मन व मस्तिष्क से मत–मतान्तरों की बातों, पूर्वाग्रहों व निजी हितों से मुक्त होकर सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने से सत्यार्थप्रकाश में निहित विषयों की सत्यता का साक्षात ज्ञान होता है जिसकी साक्षी स्वयं हमारी अर्थात् पाठक की आत्मा देती है। सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन कर उसे समझ लेने पर सभी मत–मतान्तरों की अच्छी व बुरी बातों का ज्ञान मनुष्यों को हो जाता है जिससे वह अन्धविश्वासों से मुक्त व विद्या व ज्ञान से युक्त हो जाते हैं। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के स्वरूप के ज्ञान सहित अध्ययनकर्ता को अपने कर्तव्यों का ज्ञान भी हो

...शेष पृ. ७ पर

'ईश्वर की कृपा व वेदाध्ययन से ही नास्तिकता की समाप्ति सम्भव'

'खुदा के बन्दो को देखकर खुदा से मुनकिर हुई है दुनिया, कि जिसके ऐसे बन्दे हैं वो कोई अच्छा खुदा नहीं।।' आजकल संसार में सभी मतों के शिक्षित व धनिक मनुष्यों का आचरण प्रायः श्रेष्ठ मानवीय गुणों के विपरीत पाया जाता है जो मनुष्यों को नास्तिक बनाने में सहायक होता। इसका एक कारण ऐसे लोगों में वेदों का ज्ञान न होना भी है। वेदों का अध येता वा ज्ञानी मनुष्य कभी नास्तिक नहीं हो सकता, ऐसा वेदों का कुछ अध्ययन करने पर हमारा विश्वास है। वेदों में जो भी मान्यतायें व सिद्धान्त हैं वह सब युक्ति, तर्क व सष्टिक्रम के अनुकूल हैं। ईश्वर का स्वरूप व उसके कार्य भी युक्ति, तर्क व बुद्धि संगत हैं। वेदों के ज्ञान से दूर नास्तिक मनुष्य को ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करने वाला ईश्वर–विश्वासी कैसे बनाया जाये? क्या नास्तिक व्यक्ति के सभी प्रश्नों व शंकाओं का उत्तर देने से वह व्यक्ति आस्तिक बन सकता है? प्रायः ऐसा नहीं होता। सभी शंकाओं का उत्तर दे देने पर भी जिन कारणों से वह नास्तिक बना होता है, वह उसके सम्मुख होते हैं जिससे वह ईश्वर के अस्तित्व को मानने को तैयार नहीं होता। उसकी आत्मा, मन व बुद्धि में ईश्वर के अस्तित्व व उसके गुण–कर्म–स्वभाव का विश्वास दिलाना कठिन कार्य होता है। इससे सम्बन्धि ात एक बहुत ही प्रेरक उदाहरण हमें भारत में गुरूकुल पद्धति के पुररूद्धारक व स्वतन्त्रता संगाम के अपने समय के प्रथम पंक्ति के नेता स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन में मिलता है जिसका वर्णन उन्होंने स्वयं अपनी लेखनी से अपनी आत्मा कथा 'कल्याण मार्ग के पथिक' में किया है।

स्वामी श्रद्धानन्द अपनी युवावस्था में नास्तिक बन गये थे, वह लिखते हैं कि 14 श्रावण संवत् 1936 (अगस्त, 1880) के दिन स्वामी दयानन्द बांसबरेली पधारे। 3 भाद्रपद को चले गये। स्वामी जी महाराज के पहुंचते ही कोतवाल साहब (स्वामी श्रद्धानन्द के पिता श्री नानक चन्द जी) को हुकुम मिला कि पण्डित दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों के अन्दर फिसाद को रोकने का बन्दोबस्त कर दें। पिता जी स्वयं सभा में गये और स्वामी जी महाराज के व्याख्यानों से ऐसे प्रभावित हुए (कोतवाल साहिब कट्टर पौराणिक थे और वैदिक सिद्धान्तों को न जानते थे और न मानते थे) कि उनके सत्संग से मुझ नास्तिक की संशयनिवषति का उन्हें विश्वास हो गया। रात को घर आते ही मुझे कहा–"बेटा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी का युवावस्था का नाम) ! एक दण्डी संन्यासी आये हैं, बड़े विद्वान् और योगिराज हैं। उनकी वक्तष्ता सुनकर तुम्हारे संशय दूर हो जाएंगे। कल मेरे साथ चलना।" उत्तर में कह तो दिया कि चलूंगा परन्तु मन में वही भाव रहा कि केवल संस्कष्त जाननेवाला साधु बुद्धि की बात क्या करेगा? दूसरे दिन बेगम बाग की कोठी में पिताजी के साथ पहुंचा जहां व्याख्यान हो रहा था। उस दिव्य आदित्यमूर्ति को देख कुछ श्रद्धा उत्पन्न हुई, परन्तु जब पादरी टी.जे. स्कॉट और दो–तीन अन्य युरोपियनों को उत्सुकता से बैठे देखा तो श्रद्धा और भी बढ़ी। अभी दस मिनट वक्तष्ता नहीं सुनी थी कि मन में विचार किया–'यह विचित्र व्यक्ति है कि केवल संस्कष्तज्ञ होते हुए युक्तियुक्त बातें करता है कि विद्वान दंग हो जाएँ।' व्याख्यान परमात्मा के निज नाम ओ३म् पर था। वह पहले दिन का आत्मिक आह्लाद कभी भूल नहीं सकता। नास्तिक रहते हुए भी आत्मिक आह्लाद में निमग्न कर देना ऋषि–आत्मा का ही काम था। उसी दिन दण्डी स्वामी से निवेदन किया गया कि टाउनहॉल मिल गया है। इसलिए कल से व्याख्यान वहॉ शुरू होंगे। स्वामी जी ने उच्च स्वर से कह दिया कि सवारी (बग्घी वा घोड़ा गाड़ी) समय पर पहुंच जाया करेगी तो वह तैयार मिलेंगे।

टाउन हाल में जब तक 'नमस्ते', 'पोप', पुराणी, जैनी, किरानी, कुरानी' इत्यादिक परिभाषाओं का अर्थ बतलाते रहे तब तक तो पिता जी श्रद्धा से सुनते रहे, परन्तु जब मूर्तिपूजा और ईश्वरावतार का खण्डन होने लगा तो जहॉ एक ओर मेरी श्रद्धा बढ़ने लगी वहां पिता जी ने तो आना बन्द कर दिया और एक अपने मातहत थानेदार की ड्यूटी लगा दी। 24 अगस्त की शाम तक मेरा समय–विभाग यह रहा कि दिन का भोजन करके दोपहर को बेगम बाग की कोठी पहुंच ड्योढ़ी पर बैठ जाता। ढाई से चार बजे के बीच में जब ऋषि का दरबार लगता तो आज्ञा होते ही जो पहला मनुष्य आचार्य ऋषि को प्रणाम करता वह मैं था। प्रश्नोत्तर होते रहते और मैं उनका आनन्द लेता रहता। व्याख्यान के बाद बीस मिनट तक सब दरबारी विदा हो जाते और आचार्य चलने की तैयारी कर लेते। मैं अपनी वेगनट पर सीधा टाउनहाल पहुंचता। व्याख्यान का आनन्द उठाकर उस समय तक घर न लौटता जब तक कि आचार्य दयानन्द की बग्घी उनके डेरे की ओर न चल देती। 25, 26, 27 अगस्त को ऋषि दयानन्द के पादरी स्कॉट के साथ तीन शास्त्रार्थ हुए। विषय प्रथम दिवस पुनर्जन्म, द्वितीय दिन ईश्वरावतार और तीसरे दिन यह था कि मनुष्य के पाप बिना फल भुगते क्षमा किये जाते हैं या नहीं। पहले दो दिन लेखकों में मैं भी था। परन्तु दूसरी रात को मुझे सन्निपात ज्वर हो गया और फिर आचार्य दयानन्द के दर्शन मैं न कर सका। 30 श्रावण से 9 भाद्रपद (15 से 25 अगस्त) तक ऋषि जीवन–सम्बन्ध ी अनेक घटनाएं मैंने देखी जिनमें से उन्हीं कुछ–एक को यहां लिखूंगा जिनका प्रभाव मुझ पर ऐसा पड़ा कि अब तक मेरी आंखों के सामने घूम

रही है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वामी दयानन्द जी के बरेली में उपदेशों की अपनी आत्मकथा में विस्तार से चर्चा की है जो पढ़ने योग्य है। हम अन्य अप्रासंगिक किन्तु अति महत्वपूर्ण चर्चा को छोड़कर अपने मुख्य विषय पर आते हैं जो स्वामी दयानन्द से उनका नास्तिकता के विषय में संवाद था। स्वामी श्रद्धानन्द जी लिखते हैं–एक अन्तिम घटना के साथ इस अपूर्व सत्संग की कथा समाप्त करता हूं। यद्यपि आचार्य दयानन्द के उपदेशों ने मुझे मोहित कर लिया था, तथापि मैं मन में सोचा करता था कि यदि ईश्वर और वेद के ढकोसले को पण्डित दयानन्द स्वामी तिलांजलि दे दें तो फिर कोई भी विद्वान् उनकी अपूर्व युक्तियों और तर्कना–शक्ति का सामना करनेवाला न रहे। मुझे अपने नास्तिकपन का उन दिनों अभिमान था। एक दिन ईश्वर के अस्तित्व पर आक्षेप कर डाले। पांच मिनट के प्रश्नोत्तर में ऐसा घिर गया कि जिह्वा पर मुहर लग गयी। मैंने कहा–'महाराज ! आपकी तर्कना शक्ति बड़ी तीक्ष्ण है। आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती (अस्तित्व) है।'' दूसरी बार फिर तैयारी करके गया, परन्तु परिणाम पूर्ववत् ही निकला। तीसरी बार फिर पूरी तैयारी करके गया परन्तु मेरे तर्क को फिर पछाड़ मिली। मैंने फिर अन्तिम उत्तर वही दिया–'महाराज ! आपकी तर्कना–शक्ति बड़ी प्रबल है। आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर की कोई हस्ती है?'' महाराज पहले हंसे, फिर गम्भीर स्वर से कहा ''देखो, तुमने प्रश्न किये, मैंने उत्तर दिये–यह युक्ति की बात थी। मैंने कब प्रतिज्ञा की थी कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूंगा? तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे।'' अब स्मरण आता है कि नीचे लिखा उपनिषद्वाक्य उन्होंने पढ़ा था––'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रेतेन। यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्।।' (कठोपनिषद 1/2/23)

स्वामी श्रद्धानन्द लिखित आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' सभी के लिये पढ़ने योग्य एक अत्युत्तम ग्रन्थ है। गांधी जी ने भी इसे पढ़ा था। वह स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपना बड़ा भाई कहते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस कथ्य में अपने जीवन की एक अत्यन्त निजी घटना भी दी हैं, जिसका उल्लेख शायद कोई मनुष्य नहीं कर सकता। इसके पढ़ने के बाद गांधी जी ने भी अपने जीवन की उससे मिलती जुलती घटना अपनी आत्मा कथा में वर्णित की थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी की आत्मकथा की भूमिका से कुछ अत्यन्त महत्वूपर्ण शब्दों को पाठको के अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं–'ऋषिवर ! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे 41 वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय–पट पर अब तक ज्यों–की–त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते–गिरते तुम्हारे स्मरणमात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है? परमात्मा के बिना, जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है? परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे सत्संग ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन–लाभ करने के योग्य बनाया?''

हमें लगता है कि संसार में अनेक प्रकार के नास्तिक हैं। कुछ नास्तिक तो ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि हम ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते। हमारे सभी कम्युनिस्ट भाई और संसार के अनेक वैज्ञानिक इस श्रेणी में लिये जा सकते हैं। दूसरे नास्तिक हम उन लोगों को भी मानते हैं जो धर्म–कर्म तो खूब करते हैं, अपने मत, पन्थ व सम्प्रदाय की धर्म–पुस्तकों को पूरी श्रद्धा पूर्वक पढ़कर उन पर आचरण करते हैं परन्तु ईश्वर के सत्य स्वरूप को न जानने और उसकी सत्य पद्धति वैदिक योग विधि से उपासना न कर
के कारण वह भी अर्ध नास्तिक ह
कहे जायेंगे। उनकी भ्रान्तियां मह
दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश आ
व वेद के स्वाध्याय से ही दूर ह
सकती है जिनकी प्रेरणा इ
अर्द्धनास्तिकों के धर्म गुरू आदि नह
करते अपितु उन्हें सत्य से विमुख
रखने का प्रयास करते हैं। अतः सत्या
प्रकाश व वैदिक साहित्य को प
बिना उन सभी की नास्तिकता समाप
होना असम्भव प्रतीत होता है। ह
लगता है कि यदि वह सत्यार्थ प्रका
व वेदादि साहित्य का अध्ययन क
तब ही ईश्वर की कष्पा होने अथव
ईश्वर के कष्पाकटाक्ष होने पर ही व
सच्चे आस्तिक व सच्चे ईश्वर विश्वास
बन सकते हैं जिस प्रकार स्वाम
श्रद्धानन्द के जीवन में हुआ। य
बात हम निष्पक्ष रूप से अपने ज्ञान
अनुभव के आधार पर कह रहे हैं
महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश
स्तुति प्रार्थना और उपासना का विस्ता
से उल्लेख किया है और उपासना क
विधि और उसका फल क्या होता है
यह भी बताया है। एतदविषयक उनव
विचार पाठको के लाभार्थ प्रस्तुत हैं
वह लिखते हैं कि जब उपासना करन
चाहें, तब एकान्त शुद्ध देश में जाक
आसन लगा प्राणायाम कर बाह
विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन क
नाभिप्रदेश में, वा हष्दय, कण्ठ, नेत्र
शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़
किसी स्थान पर स्थिर कर अप
आत्मा और परमात्मा का विवेचन करव
परमात्मा में मग्न होकर संयमी होवे
जब इन साधनों को करता है, त
उसका आत्मा और अन्तःकरण पवि
होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है
नित्य प्रति ज्ञान–विज्ञान बढ़ा क
मुक्ति तक पहुंच जाता है। जो आ
प्रहर में एक घड़ी भर भी इस प्रकार
यान करता है वह सदा उन्नति क
प्राप्त हो जाता है। उपासना का फ
बताते हुए वह कहते हैं कि जैसे शी
से आतुर पुरुष का अग्नि के पास
जाने से शीत निवष्त्त हो जाता है
वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने र
सब दोष–दुःख छूटकर परमेश्वर व
गुण–कर्म–स्वभाव के सदष्श जीवात्म

के गुण–कर्म–स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिये परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। उपासना से आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरावेगा, और सब को सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? और जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता (यह बात नास्तिक, अर्धनास्तिक और सही विधि से उपासना न करने वाले सभी लोगों पर लागू होती है), वह कष्तघ्न और महामूर्ख भी होता है क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत के सब पदार्थ बनाकर जीवों को सुख के लिये दे रक्खे हैं, उसका गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना कष्तघ्नता और मूर्खता है।

नास्तिक लोगों का मत होता है कि ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है। इसी कारण से वह वेद और धर्म–कर्म को नहीं मानते। ऐसे लोगों का नास्तिक बनना भी कई बार मत–पन्थों की मिथ्या मान्यतायें व कर्म–काण्ड ही होते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द भी मिथ्या मान्यताओं, पाखण्ड से पूर्ण परम्पराओं व धार्मिक कहे जाने वाले लोगों के अनाचार को देखकर ही नास्तिक हुए थे। अतः ईश्वर व उसकी उपासना की विधि को तर्क, युक्ति व बुद्धि की कसौटी पर कस कर ही स्वीकार करना चाहिये। प्रश्न है कि आप ईश्वर–ईश्वर कहते हो, परन्तु उसकी सिद्धि किस प्रकार करते हो? स्वामी दयानन्द–सब प्रत्यक्षादि प्रमाणों से। प्रश्न–ईश्वर में प्रत्यक्षादि प्रमाण कभी नहीं घट सकते? स्वामीजी –'इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्' (न्यायदर्शन)। जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख–दुःख सत्यासत्य विषयों के साथ सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है, उसको 'प्रत्यक्ष' कहते हैं, परन्तु वह निर्भ्रम हो। अब विचारना चाहिये कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है गुणी का नहीं। जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श रूप, रस और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथिवी

पृ. ४ का शेष....

जाता है। हमारे इस विवेचन से यह ज्ञात हुआ कि ईश्वर ज्ञान का देने वाला आदि स्रोत है। इसके बाद जो भी ग्रन्थ व पुस्तकें अस्तित्व में आई हैं वह सब ऋषि–मुनियों व साधारण मनुष्यों रचित पुस्तकें हैं। जिन ग्रन्थों में ईश्वर व सत्पुरूषों की प्रशंसा है, वह पठनीय हैं और जिसमें एक दूसरे की निन्दा व भ्रान्तियुक्त कथन व सृष्टिकम के विरूद्ध अविश्वनीय तर्क व युक्ति विरूद्ध बातें हैं वह पुस्तकें व

उसका आत्मा–युक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है, वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचनाविशेष आदि (कर्म और) ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। और जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता, वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उस समय जीव की इच्छा–ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा, तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्साह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं, किन्तु परमात्मा की ओर से है व होता है। और जब जीवात्मा शुद्ध होके परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है, उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं। जब परमेश्वर क प्रत्यक्ष होता है तो अनुमानादि से पमेश्वर के ज्ञान होने में क्या सन्देह है? क्योंकि कार्य को देखके कारण का अनुमान होता है। हम समझते हैं कि जिस व्यक्ति को यह बातें समझ में आ जाती है उसे फिर ईश्वर के अस्तित्व के बारे में कोई शंका नहीं रहती। अतः इन पंक्तियों को बार बार पढ़ कर उसका यथार्थ भाव समझने का प्रयास करना चाहिये। स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द की भांति सच्चा आस्तिक बनने के लिए ईश्वर की कष्पा के साथ वेदादि सदग्रन्थों का स्वाध्याय व अध्ययन आवश्यक है। ईश्वर के प्रति श्रद्धा व विश्वास तभी जाग्रत होते हैं जब ईश्वर की कष्पा होती है। इसी के साथ लेखनी को विराम देते हैं।

ग्रन्थ साधारण मनुष्यों द्वारा लिखित होने से त्याज्य हैं। वह प्रमाण कोटि में नहीं आते हैं। ऐसे ग्रन्थ विष सम्पृक्त अन्न के समान होते हैं। महर्षि दयानन्द ने समस्त वैदिक साहित्य से ज्ञान का आलोडन कर प्राप्त हुए सत्य ज्ञान को सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ में प्रस्तुत किया था। इसे पढ़कर निष्पक्ष भाव से इसके संसार का अन्धविश्वास निवारण व सभी आधयात्मिक व सांसारिक सत्य व यथार्थ ज्ञान को प्रदान करने वाला अपूर्व सर्वोत्तम ग्रन्थ कहा जा सकता है। अतः सफल जीवन व्यतीत करने के लिए किसी भी मत, सम्प्रदायं व पन्थ में न फंस कर यदि सत्यार्थ प्रकाश व अन्य वैदिक साहित्य को पढ़ा जाये तो मनुष्य अज्ञान व अन्ध ाविश्वासों सहित अन्धी श्रद्धा व आस्था से भी बच सकता है। जो व्यक्ति ईश्वर से प्राप्त मनुष्य जीवन में सत्य को जानने व उसे धारण करने का प्रयत्न नहीं करता व परम्परागत मतों को आंख मूंद कर यथावत् स्वीकार कर लेता है, उसका जन्म लेना इसलिए व्यर्थ सिद्ध होता है कि परमात्मा से प्राप्त सत्य व असत्य का विवेचन करने के लिए प्राप्त बुद्धि का उसने सदुपयोग नहीं किया है। वैदिक विचारध ाारा जिसका पूरा पोषण सत्यार्थ प्रकाश में हुआ है, उसके अनुसार मनुष्य जीवन का उद्देश्य अभ्युदय व निःश्रेयस (मोक्ष प्राप्ति) है। इन दोनों की प्राप्ति वैदिक विचाराधारा के अनुसार जीवनयापन कर 'धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष' के रूप में होती है। अतः जीवन के कल्याण व सफलता के लिए सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य के इतर ग्रन्थों का सजग होकर विवेकपूर्वक अध्ययन करना चाहिये। यह भी बताना है कि सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर एक माह में जो अधिकांश ज्ञान प्राप्त होता है वह समस्त वैदिक साहित्य के द्वारा कई वर्षों में होता है। अतः सत्यार्थप्रकाश वैदिक वांग्मय का सार व अर्वाचीन मत–मतान्तरों के यथार्थ स्वरूप का परिचय कराने वाला दुर्लभ व मूल्यावान ग्रन्थ है। एक कवि की दो पंक्तियां लिखकर इस लेख को विराम देते ह

भरोसा कर तू ईश्वर पर तुझे धोखा नहीं होगा।
यह जीवन बीत जायेगा, तुझे रोना नहीं होगा।।

Arya Jeevan

हाशिए पर आदिवासी

• राजीव कुमार

झारखंड में बिरसा मुंडा के जन्म से कई वर्ष पहले संथाल परगना के भगनाडीह गांव में चुनका मुर्मू के घर चार भाइयों सिद्धू, कान्हू, चांद एवं भैरव तथा दो बहनें फूलो एवं झानो ने जन्म लिया। सिद्धू अपने चार भाइयों में सबसे बड़े थे। कान्हू के साथ मिलकर वर्ष 1853 से 1856 तक संथाल उन्होंने हूल अर्थात संथाल विपल्व, जो अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ लड़ा गया, का नेतृत्व किया।

इतिहासकारों ने संथाल विपल्व को मुक्ति आंदोलन का दर्जा दिया है। संथाल हूल या विपल्व कई अर्थों में समाजवाद के लिए पहली लड़ाई थी, जिसमें न सिर्फ संथाल जनजाति के लोग बल्कि समाज के हर शोषित वर्ग के लोग सिद्धू एवं कान्हू के नेतृत्व में आगे आए।

इस मुक्ति आंदोलन में बच्चे, बूढ़े, मर्द-औरत सभी ने बराबर हिस्सेदारी की, चारों भाइयों की दो बहनें फूलों और झानो घोड़े पर बैठ साल पत्ता लेकर गांव-गांव जाकर हूल का निमंत्रण देती थी और मौका मिलने पर अंग्रेज सिपाहियों को उठाकर ले आती

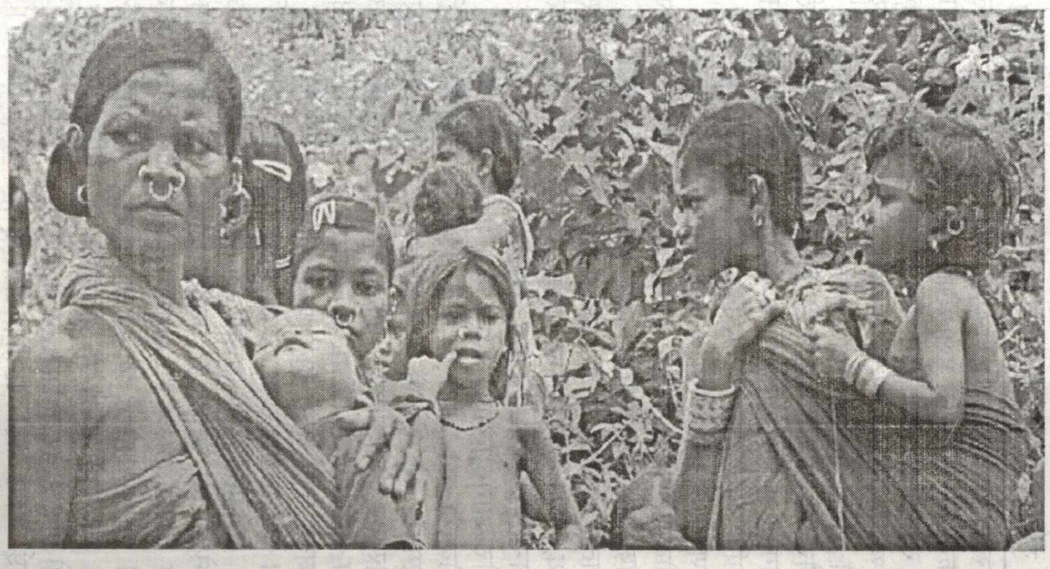

संथाल हूल का महत्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जर्मनी के समकालीन चिंतक कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'नोटस आफ इंडियन हिस्ट्री' में जून 1855 के संथाल हूल को जनक्रांति की संज्ञा दी है. परंतु भारतीय इतिहासकारों ने आदिवासियों की उपेक्षा करते हुए इतिहास में इनको हाशिये में डाल दिया, परिणामस्वरूप आज सिद्धू, कान्हू, चांद, भैरव व इनकी दो सगी बहनें फूलो एवं झानो के योगदान को इतिहास के पन्नों में नहीं पड़ा जा सकता है।

पारम्परिक उपचार से ठीक होकर फिर आंदोलन में कूद पड़े। सिद्धू को ठीक होने में कुछ ज्यादा वक्त लगा, मगर इसी बीच एक विश्वासघाती ने अंग्रेजों को सूचना दे दी और सिद्धू को पकड़वा दिया। यह संथाल विपल्व को पहला झटका था। दूसरा झटका जामताड़ा में लगा, जब उपरबांधा के सरदार घटवाल ने धोखे से कान्हू को जनवरी 1856 में अंग्रेजी सेना के हवाले कर दिया। सिद्धू को अंग्रेज पहले ही फांसी दे चुके थे। आनन-फानन में एक झूठा मुकदमा चलवाकर कान्हू को भी फांसी पर लटका दिया गया। हालांकि सिद्धू, कान्हू व उनके दो अन्य भाई चांद और भैरव इस संथाल विपल्व में शहीद हो गये थे, मगर अंग्रेज इस आंदोलन को पूर्णत कुचल नहीं पाए। भारत का यह दूसरा महान विपल्व था। वर्ष 1831 का कोल विपल्व भारत का प्रथम महान विपल्व था तथा 1857 का सैनिक विद्रोह भारत का तीसरा महान विपल्व था।

वर्ष 1855 के संथाल विपल्व में अंतर्निहित शक्ति का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अंग्रेजों ने विपल्व की शक्ति कम करने के लिए बिना मांगे भारत में सबसे पहला आदिवासी नाम का

Date: 18-08-2015

थी और उनका कत्ल कर देती थी. आज भी इस मुक्ति आंदोलन की अमरगाथा झारखंड के जंगलों, पहा ों, कंदराओं तथा जन-जन के हृदय में व्याप्त है।सिद्धू और कान्हू के नेतृत्व में चलाया गया यह मुक्ति आंदोलन 30 जून 1855 से सितम्बर 1856 तक अविराम गति से संथाल परगना के भगनडीहा ग्राम से बंगाल स्थित मुर्शिदाबाद के छोर तक चलता रहा। इसमें अत्याचारी जमींदारों, महाजनों, अंग्रेज अफसरों, अंग्रेजों का साथ देने वाले भारतीय अफसरों, जमींदारों, राजा-रानी को कुचलते हुए इन लोगों की धन-सम्पदा पर कब्जा किया गया। यह धन-संपदा सिद्धू एवं कान्हू ने सारे गरीबों में बांट दिया था।भगनाडीह ग्राम में 30 जून 1855 को सिद्धू एवं कान्हू के नेतृत्व में एक आमसभा बुलाई गयी, जिसमें भगनाडीह ग्राम के जंगल तराई के लोग तो शामिल हुए ही थे, दुमका, देवघर, गोड्डा, पाकुड़ जामताड़ा, महेशपुर, कहलगांव, हजारीबाग, मानभू, वर्धमान, भागलपुर, पूर्णिया, सागरभांगा, उपरबांध आदि के सभी समुदायों के तकरीबन दस हजार लोगों ने भाग लिया। इसमें सभी एकमत से जमींदारों, ठेकेदारों, महाजनों एवं अत्याचारी अंग्रेजों एवं भारतीय प्रशासकों के खिलाफ लड़ने तथा उनके सभी अत्याचारों से छुटकारा पाने के लिए दृढ़ संकल्प हुए तथा सर्वसम्मति से सिद्धू एवं कान्हू को अपना सर्वमान्य नेता चुना। अपने दोनों भाइयों को सहयोग देने के लिए सिद्धू एवं कान्हू के दो अन्य भाइयों चांद और भैरव भी इस जनसंघर्ष में कंधे से कंधा मिलाकर लड़े और अपना सर्वस्व न्यौछावर किया। इस आम सभा में अनुशासन और नियम तय किए गए। अलग-अलग समूहों को अलग-अलग जिम्मेदारियां सौंपी गयीं। भारत में पांव जमाते अंग्रेज व्यापारियों को उखाड़ फेंकने का इस आम सभा में उपस्थित दस हजार लोगों पर उन्माद सा छा गया था। 30 जून 1855 में अंग्रेज अत्याचारियों के खिलाफ संघर्ष के जुनून का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस वर्ष खेती नहीं करने का फैसला किया गया। ऐसा फैसला लेना मामूली बात नहीं थी। सिद्धू और कान्हू ने यह फैसला इस मकसद से लिया था कि आदिवासी लोग तो कंद-मूल खाकर रहे लेंगे, पर जब खेती ही नहीं होगी तो अंग्रेज और उनके मातहत रहने वाले बाबू क्या खायेंगे। गौरतलब है कि अनाज खाते तो सभी थे, पर उपजाते सिर्फ आदिवासी थे। हालांकि इस फैसले ने गरीब आदिवासियों को मरने का रास्ता दिखाया था, परंतु जिन्दगी के लिए लड़ने का वह उन्माद उन लोगों पर ऐसा छाया था कि यह फैसला भी सर्वसम्मति से आमसभा में पारित हो गया और खेती बंद कर दी गयी।

इतिहास गवाह है कि 1767 के मार्च में बे ते बंदूकधारी अंग्रेज फौजियों को रोकने के लिए धालमूमगे के आदिवासियों ने अपने-अपने घर आग लगाकर फूंक दिये थे। उन्होंने तीर-धनुष और गौरिल्ला हमलों के बल पर 1767 से 1800 तक अंग्रेजों को अपने क्षेत्रों में घुसने नहीं दिया था। 30 जून 1855 को भगनाडीह ग्राम में आहूत आमसभा में लिया गया खेती नहीं करने का निर्णय भी अपना घर फूंकने जैसा ही था। वर्ष 1855 में अंग्रेज सरकार के कोलकाता से संथाल परगना के लोहपहो तक रेलवे लाइन बिछाने के फैसले ने संथाल विपल्व की आग में घी डालने का काम किया। रेल लाइन बिछाने के क्रम में संथालों के बाप-दादाओं के भूखंडों को बिना मुआवजा दिए कब्जा लिया गया। हजारों एके उपजाऊ भूमि संथालों से छीन ली गयी।

रेलवे लाइनों में गरीबों को बेगार मजदूरी करवायी गयी तथा उन्हें जबरन कोलकाता भेज दिया गया। इतिहास में टामस और हेनस नामक ठेकेदारों का जिक्र आता है, जिन्होंने आदिवासियों पर अमानुषिक अत्याचार किए। बच्चे, बूढ़े तथा औरतों को भी नहीं बख्शा गया। लोगों के लिए अत्याचार सहन करना मुश्किल हो गया था। समुदाय के स्वाभिमान का प्रश्न आ खड़ा हुआ था। 30 जून 1855 को सभी एकमत थे कि अब और नहीं सहेंगे और उन्होंने तय किया कि इस साल धान नहीं, अत्याचारी अंग्रेजों और उनके समर्थकों के गर्दनों की फसल काटेंगे। इसी के बाद हूल अर्थात विपल्व शुरू हुआ। संथाल परगने की धरती लाशों से बिछ गयी, खून की नदियां बहने लगीं। तोपों और बंदूक की गूंज से संथाल परगना और उसके आसपास के इलाके कांप उठे संथाल विपल्व की भयानकता और सफलता इस बात से लगायी जा सकती है कि अंग्रेजों के तकरीबन दो सौ साल के शासनकाल में केवल इसी आंदोलन को दबाने के लिए मार्शल लॉ लागू किया गया था, जिसके तहत अंग्रेजों ने आंदोलनकारियों एवं उनके समस्त सहयोगियों को कुचलने के लिए अमानुषिक अत्याचार किए। इस घटना का जिक्र इतिहास के पन्नों में पूरी तरह नहीं मिलता है, परंतु अंग्रेजों द्वारा किये गये अमानुषिक अत्याचारों की झलक संथाली परम्पराओं, गीतों, कहानियों में आज भी झारखंड में जीवित है।संथाल विपल्व विश्व का पहला ऐसा आंदोलन था जिसमें औरतों ने भी समान भागीदारी निभाई थी। 30 जून 1855 के बाद से लेकर अक्टूबर माह के अंत तक चले आंदोलन में पूरे क्षेत्रों में फैले करीब सभी गांवों पर आंदोलनकारियों का अधिकार हो चुका था। इस दौरान महेशपुर के सम्मुख हुयी भि त में सिद्धू, कान्हू तथा भैरव घायल हो गए, जिसमें सिद्धू के जख्म गंभीर थे। कान्हू और भैरव जड़ी-बूटी के

तथा संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम बनाया। इसमें कोई दोराय नहीं कि भारत का प्रथम राष्ट्रीय आंदोलन कहा जाने वाला 1857 का सैनिक विद्रोह बहुत कुछ संथाल विपल्व के पदचिन्हों पर चला और आगे इसी तरह भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की अग्नि को प्रज्वलित करता रहा। संथाल हूल का महत्व का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जर्मनी के समकालीन चिंतक कार्ल मार्क्स ने अपनी पुस्तक 'नोटस आफ इंडियन हिस्ट्री' में जून 1855 के संथाल हूल को जनक्रांति की संज्ञा दी है। परंतु भारतीय इतिहासकारों ने आदिवासियों की उपेक्षा करते हुए इतिहास में इनको हाशिये में डाल दिया, परिणामस्वरूप आज सिद्धू, कान्हू, चांद, भैरव व इनकी दो सगी बहनें फूलो एवं झानो के योगदान को इतिहास के पन्नों में नहीं पे । जा सकता है। झारखंड के बच्चों को इन महानायकों एवं नायिकाओं के संबंध में पे ाया ही नहीं जाता है। हूल विपल्व आज भी अप्रासंगिक है, क्योंकि जिस उद्देश्य से सिद्धू और कान्हू ने विपल्व की शुरुआत की थी, वह आज 158 वर्षों बाद भी झारखंड के आदिवासियों को हासिल नहीं हो पाया है। झारखंड राज्य गठन के बाद आज तक मुख्यमंत्री समेत कई अन्य महत्वपूर्ण विभागों में आदिवासी नेतृत्व रहा, परंतु आदिवासियों का शोषण निरंतर जारी है।

Date: 18-08-2015

ఆర్యసమాజ్ నారాయణపేట్ ఆధ్వర్యంలో నిర్వహించబడుచున్న దయానంద విద్యామందిర్ ఉన్నత పాఠశాల ఉపాధ్యాయి సుశ్రీ నాగమ్మ గారికి జాతీయ ఉత్తమ ఉపాధ్యాయ అవార్డు లభించినది. 5వ సెప్టెంబరు 2015 నాడు ఢిల్లీలో రాష్ట్రపతి ప్ర ముఖర్జీ చేతులమీదుగా ఈ గౌరవాన్ని రూ॥ 50,000/- నగదుతో బాటు అందుకోబోతున్నారు

వసుంధర

ఉపాధ్యాయ వృత్తంటే జీవితం చాలా సాఫీగా ఉంటుందనే అభిప్రాయం మనలో చాలామందికుంది. ఉద్యోగ పరంగా పెద్దగా సవాళ్లుండవనీ, ఒక్కసారి శిక్షణ తీసుకుంటే జీవితాంతం కష్టపడక్కర్లేదనీ.. ఇలా! కానీ నాసిరకం వసతులూ, అంతంతమాత్రం వనరులూ.. వీటి మధ్య నిత్యం పోరాడుతూ చిన్నారుల జీవితాల్లో వెలుగులు నింపే ఉపాధ్యాయులు కోకొల్లలు. వారికి ఈ ముగ్గురూ మేటి ప్రతినిధులు! అందుకే సెప్టెంబర్ 5న రాష్ట్రపతి ప్రణబ్ చేతుల మీదుగా ఉత్తమ ఉపాధ్యాయినులుగా గౌరవం అందుకోబోతున్నారు. స్ఫూర్తిమంతమైన వారి విజయాలు క్లుప్తంగా..

ప్రియ రాష్ట్రపతీ... వీళ్లే మా టీచరమ్మలు!

36 ఏళ్ల కృషి ఫలితమిది!

నేను టీనేజీలోనే అధ్యాపక వృత్తిలోకి వచ్చేశాను. అప్పట్నుంచి చిన్నారులకి ఆటాపాటలతో చదువు నేర్పిస్తున్నా! బుడిబుడి నడకలతో నా చిటికెన వేలు పట్టుకుని నడిచిన పిల్లలు.. ఇప్పుడు తమ భార్యాపిల్లలతో వచ్చి 'ఈమే మా నాగమ్మ టీచర్!' అని పాదాభివందనం చేస్తుంటే కన్నీళ్లు ఆగడం లేదు" అంటారు నాగమ్మ. ఉపాధ్యాయినిగా ఆమె సుదీర్ఘకాల కృషికే ఇప్పుడు కేంద్రప్రభుత్వం జాతీయస్థాయి ఉత్తమ ఉపాధ్యాయిని అవార్డుతో గుర్తించింది. ముప్పై ఆరేళ్లకిందటి మాట ఇది. ఆర్యసమాజం మహబూబ్ నగర్ జి నారాయణపేటలో ఓ పాఠశాల ఏర్పాటుచేయాలనుకుంది. పనులు మొదలుపెట్టింది. కానీ ప్రాంతానికొచ్చి పనిచేయడానికి ఉపాధ్యాయినులెవ్వరూ ముందుకు రాలేదు. ఆ ప్రాంతంలో శిక్షణ పొంది వారూ లేరు. దాంతో నాగమ్మ ధైర్యంగా ముందుకొచ్చారు. అప్పటికి ఆమె ఇంటర్ కూడా ముగించలే అలా నాగమ్మ ఏకోపాధ్యాయురాలిగా 20 మంది పిల్లలతో 'దయానంద విద్యామందిర్' ప్రారంభమైంది. వైపు విద్యార్థులకు పాఠం చెబుతూనే ఆమె కూడా ఉన్నత విద్యాభ్యాసం చేశారు. ఎంఏ బీఎడ్ ముగించార ఉపాధ్యాయినిగానూ చక్కటి ఫలితాలు చూపించారు. దాంతో ఏడేళ్లకే ప్రభుత్వం నుంచి ఎయిడెడ్ గుర్తిం వచ్చింది. అప్పటి నుంచీ ఆ పాఠశాల అభివృద్ధిలో ఆమె కృషి ఎంతో ఉంది. విద్యార్థులు కేవలం చదువుల్లో కాకుండా శారీరకంగానూ దృఢంగా ఉండాలని చూసేవారు. స్కౌట్స్ అండ్ గైడ్స్‌లో విద్యార్థులకు శిక్ష ఇప్పించి రాష్ట్రపతి స్థాయి అవార్డులు పొందేలా ప్రోత్సహించారు. 2012లో 'ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలి ఎంపికయ్యారు. 2014లో ఇందిరాగాంధీ అంతర్జాతీయ ఉత్తమ ఉపాధ్యాయురాలిగానూ గుర్తిం పొందారు. 'రాష్ట్రపతి పురస్కారం లభించడం నా బాధ్యతను మరింత పెంచింది' అంటున్నారామె.

- నెమలి లక్ష్మారెడ్డి, ఈనాడు, కరీంనగర్ డెస్

---

10 | 14 ఆగస్టు 2015 | ఆంధ్రజ్యోతి | జనరల్

పేట ఉపాధ్యాయురాలికి...

జాతీయ అవార్డు

- సెప్టెంబర్ 5న రాష్ట్రపతి చేతుల మీదుగా
- సామాజిక కార్యక్రమాలతో ముందుకు
- పురస్కారం ఊహించలేదు: నాగమ్మ

అవార్డు రావడం ఆనందంగా ఉంది: నాగమ్మ

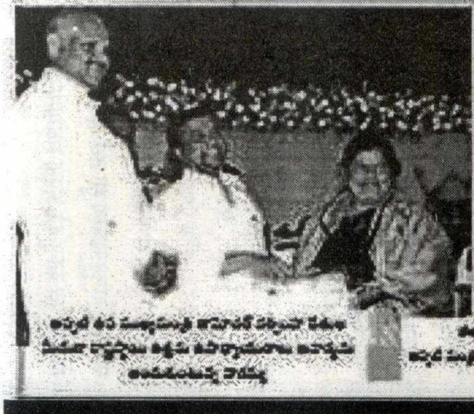

అసలు మహాత్ముడు
ఇదేమి షరతు మహాత్మా!

'ఒక్కసారి మహాత్ముడిని మన దగ్గరికి వచ్చిపొమ్మనండి. ఆయనను కళ్ళారా చూసుకుని తరిస్తాం' అని శ్రద్ధానందను బతిమిలాడారు ప్రజలు. 'మీ దర్శనాన్ని జనమంతా కోరుతున్నారు. ఎలాగూ పంజాబ్, సింధ్‌ల పర్యటనకు వెళుతున్నారు గదా. మధ్యలో మా దగ్గర ఒకరోజు ఆగండి' అని గాంధిగారికి స్వామి తంతి ఇచ్చాడు.

'సరే. రేపు సాయంత్రం అక్కడికి వస్తాను. కాని నా రాకను రహస్యంగా ఉంచండి. జనాలందరూ వచ్చి ప్రదర్శన చేస్తే నేను భరించలేను. అసలే నా ఆరోగ్యం బాగోలేదు' అని తిరుగు టెలిగ్రాం ఇచ్చాడు మహాత్ముడు.

స్వామిజీ ఉసూరుమన్నాడు. 'దేవుడిలా తనను కొలిచే భక్తులకు దర్శనవే ఇవ్వనంటాడేమిటి ఈయన' అని లోపల నొచ్చుకున్నాడు. చేసేదిలేక నాయకుడి ఆజ్ఞను పాటించాడు. కొద్దిమంది ముఖ్య నాయకులను మాత్రం తీసుకుని రైల్వేస్టేషనుకు వెళ్లాడు.

రైలు వచ్చింది. కాని అందులో మహాత్ముడు లేడు.

ఢిల్లీకి 65 కిలోమీటర్ల దూరం ఉండగానే పల్వాల్ స్టేషను దగ్గర అధికారులు గాంధిని దింపేశారు. మీరు వెళితే శాంతికి భంగం వాటిల్లుతుంది కనుక పంజాబ్‌కు మీరు వెళ్లటానికి వీల్లేదంటూ నిషేధాజ్ఞను చేతిలో పెట్టి, పోలీసు ఎస్కార్టుతో ముంబయి వెళ్లే రైలు ఎక్కించారు. ముంబయిలో దిగగానే ఆయనను మీ దారిన మీరు వెళ్లవచ్చని చెప్పి విడిచిపెట్టారు.

నిజానికి అది అరెస్టు కాదు. కాని మహాత్ముడిని నిర్బంధించారన్న వార్త దేశమంతా కార్చిచ్చులా వ్యాపించింది. బ్రిటిష్ దుర్నీతికి వ్యతిరేకంగా సెగలు కక్కుతున్న ప్రజాగ్రహం ఒక్కపెట్టున భళ్లుమంది. దేశంలో ఎక్కడ చూసినా నిరసన ప్రదర్శనలు, హర్తాళ్‌లు, 'మహాత్మాగాంధీకీ జై' అని మిన్నంటేలా నినాదాలు.

ముంబయిలో రైలు దిగిన కాసేపటికి సర్కారీ అధికారులు గాంధిగారి దగ్గరికి పరుగున వెళ్లారు. 'నగరంలో పరిస్థితి మహా ఉద్రిక్తంగా ఉంది. జనం రెచ్చిపోయి ఉన్నారు. మీరు కనపడితే తప్ప వాళ్లు శాంతించరు' అని వేడుకున్నారు. ఆయన దిగ్గున వెళ్లాడు. నాయకుడు కంటపడగానే ప్రజలు బ్రహ్మానందపడ్డారు. ఆయనను ముందు పెట్టుకుని పెద్ద ఊరేగింపు తీశారు. ప్రశాంతంగా సాగుతున్న జనవాహినిని పోర్ట్ వైపు వెళ్లనీయకుండా పోలీసులు బలవంతంగా అడ్డుకున్నారు. అశ్విక దళం పోలీసులు జనం మీదికి గుర్రాలను ఎక్కించి అందిన వారినల్లా బల్లేతో పొడుచుకుంటూ స్వైరవిహారం చేశారు. గాంధిగారు కూచుని ఉన్న కారును కూడా బల్లెం రాచుకుని వెళ్లింది. గుర్రాల గిట్టల కింద నలిగి, బల్లెం పోట్లు తిని వందల మంది తీవ్రంగా గాయపడ్డారు. క్షతగాత్రుల హాహాకారాలతో పరిసరాలు మారుమోగాయి. మహాత్ముడు అతికష్టం మీద క్షేమంగా బయటపడ్డాడు.

అటునుంచి అహిమ్మదాబాద్‌కూ అల్లర్లు పాకాయి. గాంధిని నిర్బంధించారని తెలిసి మిల్లు కార్మికులు రెచ్చిపోయారు. ఎక్కడ పనులు అక్కడ మానేసి వీధుల్లోకి వచ్చారు. జనం ఆవేశపూరితులైనప్పుడు ఎక్కడైనా జరిగేటట్టే ఆ నగరంలోనూ కొంత విధ్వంసం అయింది. గుంపు మీదికి కాల్పులు జరిపిన పోలీసు సార్జంటును జనం పట్టుకుని కొట్టి చంపారు.

పంజాబ్ అల్లర్లను ఆ దరిమిలా విచారించిన హంటర్ కమిటీ నివేదిక ప్రకారం-అహమ్మదాబాదులో అల్లరి మూక ఇద్దరు అధికారులను హతమార్చగా పోలీసులు 28 మందిని కాల్చి చంపారు. 123 మందిని గాయపరిచారు. పోలీసు తూటాలు బలిగొన్నవారి సంఖ్య అధికారికంగా చెప్పిన దానికంటే చాలా ఎక్కువే. గుంపులను విధ్వంసానికి పురికొల్పింది పోలీసులు చేసిన అఘాయిత్యాలే.

తొలి కబురు తెలియగానే గాంధీగారు అహమ్మదాబాద్‌కు దివ్వున వెళ్లాడు. తెల్లదొరతనమూ, దానిచేతిలోని పోలీసు బలగమూ చేసిన కొండంత అపరాధాలు ఆయన కంటికి ఆనలేదు. తన మీద వెర్రిభక్తితో అమాయక జనం క్షణికోద్రేకంలో చేసిన గోరంత తప్పులే ఆయనకు భూతద్దంలో కనిపించాయి.

1919 ఏప్రిల్ 14న అహమ్మదాబాద్ ప్రసంగంలో ఆయన ప్రజల పాపాలను ఇలా ఏకరువు పెట్టాడు:

'సత్యాగ్రహంలో హింస పనికిరాదని, విధ్వంసానికి తావు లేదని నేను లెక్కలేనన్నిసార్లు చెప్పాను. అయినా సత్యాగ్రహం పేరిట మనం భవనాలు తగలబెట్టాం. ఆయుధాలను గుంజుకున్నాం. రైళ్లు ఆపాం. టెలిగ్రాఫ్ తీగలు కత్తిరించాం. అమాయకులను చంపాం. దుకాణాలు, ఇళ్లు దోచుకున్నాం. ఇలాంటి పనులు చేస్తేగాని నన్ను ఖైదు నుంచో, ఉరికంబం నుంచో రక్షించలేరనుకుంటే అలాంటి రక్షణ నాకు వద్దే వద్దు'

[*Mahatma Gandhi* - The man and His Mission, p.55]

అటునుంచి ఖేదా జిల్లా నదియాద్‌కు వెళ్లాడు. అక్కడా అలాంటి పరిస్థితే. ఒళ్లెరుగని కోపంలో జనం చేసిన ఆగడాల వైనాలు వినేకొద్దీ మహాత్ముడికి దుఃఖం

వచ్చింది. శాసనోల్లంఘనకు పాల్పడమని పిలుపు ఇవ్వడం ద్వారా తానే పెద్ద తప్పు చెసినట్టు ఆయనకు అర్థమైంది. సత్యాగ్రహి అన్నవాడు అన్ని శాసనాలనూ తుచ తప్పక పాటించాలి. అప్పుడు మాత్రమే కొన్ని ప్రత్యేక పరిస్థితుల్లో ఎంచుకున్న కొన్ని శాసనాలను ఉల్లంఘించే హక్కు అతడికి వస్తుంది. అన్ని విధాల యోగ్యత పొందకుండా సత్యాగ్రహానికి దిగే హక్కు ఎవరికీ లేదు. అలా తాను పెట్టే పరీక్షలన్నీ నెగ్గి, తన ప్రమాణాల ప్రకారం పూర్తి యోగ్యత సంతరించుకోక ముందే జనానికి సత్యాగ్రహ ఆయుధం ప్రసాదించటం ద్వారా తానే హిమాలయాలంత పెద్ద తప్పు (Himalayan miscalculation) చేశానని గాంధీజీ చెప్పుకున్నాడు.

అక్కడితో ఆగలేదు. రౌలట్ చట్టానికి వ్యతిరేకంగా దేశమంతటా ఉవ్వెత్తున సాగుతున్న జాతీయోద్యమాన్ని ఉన్నపళాన ఆపేశాడు. సత్యాగ్రహ తత్వాన్ని పూర్తిగా అర్థం చేసుకుని, దాని కఠోర నియమాలను ప్రజలకు వివరించి, వారు దారి తప్పకుండా చూసేందుకు కునుకులేని కావలి కాయగలరని తనకు నమ్మకం కలిగించగల స్వచ్ఛహృదయాల వలంటీర్లు తయారు అయ్యేవరకూ విస్తృత స్థాయిన ప్రజా పోరాటం మళ్లీ మొదలెట్టేదే లేదని చేట గొట్టాడు.

బంగారంలాంటి ప్రజా పోరాటాలు మొదలయ్యీ కాగానే నిష్కారణంగా, చేజేతులా అణచివేసే మహాత్ముడి లీలల వరసలో ఇది మొదటిది. రౌలట్ బిల్లు అలజడి తరవాత సహాయ నిరాకరణ ఉద్యమం; పదేళ్ల విరామం తర్వాత శాసనోల్లంఘనోద్యమం. మళ్లీ పుష్కరం తరవాత క్విట్టిండియా పోరాటం... అన్నిటిదీ ఒకటే తీరు. నిర్మాణ కార్యక్రమాలు, పాయిఖానాల కడుగుళ్లు, రాట్నాల వొడుకుళ్లు అంటూ ఏళ్ల తరబడి కాలక్షేపం చేస్తూ, మరీ తప్పనిసరి అయినప్పుడు దశాబ్దానికో ఉద్యమం మొదలెట్టి, అది కాస్త కాక అందుకుంటూండగా ఏదో ఒక సాకుతో రక్కున ఆపేసి, తెల్ల సర్కారును సంతోష పెట్టటంతోనే మహాత్ముడు పావుశతాబ్దం గడిపేశాడు.

> తొలి కబురు తెలియగానే గాంధిగారు అహమ్మదాబాద్‌కు రివ్వున వెళ్లాడు. తెల్లదొరతనమూ, దాని చేతిలోని పోలీసు బలగమూ చేసిన కొండంత అపరాధాలు ఆయన కంటికి ఆనలేదు. తన మీద వెర్రిభక్తితో అమాయక జనం క్షణికోద్రేకంలో చేసిన గోరంత తప్పులే ఆయనకు భూతద్దంలో కనిపించాయి.

ఉద్యమ నాయకుడు అనుకున్నవాడే ఉద్యమం ఉసురు తీసే విచిత్ర పరిణామం తటస్థించిన ప్రతిసారీ ఆయనను నమ్ముకున్న ప్రతివాడూ, అప్పటి మన జాతీయ నాయకుల్లో ప్రతి ఒక్కరూ దిగ్భ్రమ చెందారు. నోట మాటరాక మ్రాన్పడ్డారు. లోలోపల మధనపడ్డారు. తప్పు చేశారంటూ మహానాయకుడికి ఉత్తరాలు రాశారు. 'ఆత్మకథ'ల్లో తెగ బాధపడ్డారు. కొందరైతే తీవ్రంగా వ్యతిరేకించారు.

కాని – అందరూ రాజీపడ్డారు. అంతటి మహాత్ముడే అలా నిర్ణయించినప్పుడు మనమేమి చేయగలం? క్రమశిక్షణగల సైనికుల్లా అధినేతను అనుసరించి, ఆయన చేసిందే రాటు కాబోలని సర్దుకుపోవటం తప్ప – అని బేలగా చేతులెత్తేశారు.

ఒక్క శ్రద్ధానంద స్వామి తప్ప.

దశాబ్దాల తరబడి వరసగా తలబొప్పి కడుతూ పోయినా మిగతా మహామహులకు అంతుబట్టని గాంధీ తత్వాన్ని శ్రద్ధానంద సన్యాసి మొదటి షాకుతోనే పోల్చుకున్నాడు. మిగతా పెద్దల్లా పలాయన ధోరణి పట్టి, క్రమశిక్షణ మాటున బలహీనతను దాచిపెట్టకుండా, పర్యవసానాలకు వెరవకుండా మహాత్ముడి తప్పును బాహాటంగా ఎత్తిచూపాడు. రైటానరబుల్ శ్రీనివాసశాస్త్రి వంటి పెద్దలు వారించినా లెక్కచేయక ఎంత పట్టుదలతో సత్యాగ్రహ ప్రతిజ్ఞ మీద సంతకం చేశాడో అంతటి తెగువతోనూ, సత్యాగ్రహ సభతో తెగతెంపులు చేసుకున్నాడు. దానికి కారణాలను వివరిస్తూ గాంధీజీకి రాసిన ఈ కింది లేఖ చదివితే మన జాతీయోద్యమంలో చాలామందికి అర్థంకాని అనేక మిస్టరీలకు అసలు కీలకం అవగతమవుతుంది.

... ...

రౌలట్ బిల్లులు మానవ స్వేచ్ఛ ప్రాథమిక సూత్రాలకే గొడ్డలిపెట్టు. అందుకే మీరు పిలుపు ఇవ్వగానే నేను మనసారా

> మిగతా మహామహులకు దశాబ్దాల తరబడి వరసగా తలబొప్పి కడుతూ పోయినా అంతుబట్టని గాంధీ తత్వాన్ని శ్రద్ధానంద స్వాసి మొదటి షాకుతోనే పోల్చుకున్నాడు. మిగతా పెద్దల్లా పలాయన ధోరణి పట్టి, క్రమశిక్షణ మాటున బలహీనతను దాచిపెట్టకుండా. పర్యవసానాలకు వెరవకుండా మహాత్ముడి తప్పును బాహాటంగా ఎత్తిచూపాడు.

స్పందించాను. మన ప్రాచీన అధ్యాత్మిక సంస్కృతికి మీరు ప్రతిరూపమని నేను తలుస్తాను.

రౌలట్ బిల్లులో మొదటిది చట్ట ప్రతిపత్తి పొందాక ఒకరోజు ప్రార్థనల ద్వారా నిరసన తెలపాలని మీరు చెప్పగానే యావద్దేశం అద్భుతంగా కదిలింది.. ఆ సందర్భాన అహమ్మదాబాదులో, విరాంగాం, అమృత్‌సర్, కసూర్ తదితర ప్రాంతాల్లో జరిగిన అత్యాచారాలను మీతోబాటు నేనూ నిష్కర్షగా ఖండిస్తున్నాను... కాని, ఢిల్లీ లాంటి చోట్ల ప్రభుత్వాధికారులు ప్రజలను బుద్ధిపూర్వకంగా రెచ్చగొట్టటాన్ని, శాంతిభద్రతల పేరు మీద పంజాబ్‌లో జరిగిన ఘోరాలను మీ మాదిరిగా నేను ఉపేక్షించలేక పోతున్నాను...

మీరన్నా, మీ సాధు స్వభావమన్నా నాకు అత్యంత గౌరవం ఉంది. ఏ లౌకిక విషయం మీదయినా మీతో విభేదించాలంటే నేను ఎంతో బాధపడతాను. నేను అనుకుంటున్నది బాహాటంగా చెప్పి, దాని పర్యవసానాలకు సిద్ధపడకపోతే నా అంతరాత్మకు సమాధానం చెప్పుకోలేనన్న భావనతోటే నేను ఇప్పుడు మీతో విభేదిస్తున్నాను.

పౌరుల శాసనోల్లంఘనను మీరు తాత్కాలికంగా నిలుపు చేశామన్నారు. ఎందుకంటే దేశంలో ప్రశాంతి నెలకొన్నాక సత్యాగ్రహ మూల సూత్రాలను ప్రజలు పూర్తిగా ఒంటబట్టించుకున్నాక దానిని మళ్లీ ప్రారంభించగలమని ఆశిస్తున్నట్టు' మీరు చెప్పారు.

ప్రస్తుత ప్రభుత్వ వ్యవస్థ కొనసాగినంత కాలమూ, దేశంలో ప్రశాంతి నెలకొ ఆశలేదు. మీరన్నట్టు సత్యాగ్రహ మూ సూత్రాలను జనం ఒంటబట్టించుకోగ సావకాశమూ కల్ల. దేశంలో ఇప్పుడు

పరిస్థితుల్లో ప్రజలలో అలజడి లేకుండా పౌర శాలనోల్లంఘన అనేది అసాధ్యం అని నేను నమ్ముతున్నాను. అలాంటి ఉద్రిక్తతకు మీరుగాని, ఏ సత్యాగ్రహిగాని నైతికంగా బాధ్యులు కారు. మీరు చెబుతున్న ప్రకారం రౌలట్ చట్టం వంటి వాటికి వ్యతిరేకంగా పౌరశాసనోల్లంఘన చేయగల సమయం సమీప భవిష్యత్తులో ఎప్పటికీ రాదు. మీరు కోరుతున్న విధంగా దేశమంతటా పూర్తి ప్రశాంతి నెలకొనగలిగితే రౌలట్ చట్టాల వంటి వాటి అవసరమే ఉండదు. క్రూర శాసనమే లేనప్పుడు దానిని ఉల్లఘించే ప్రసక్తీ ఎప్పుడూ ఉండదు.

సత్యాగ్రహ శపథం మీద నేను సంతకం చేయడానికి ప్రధాన కారణమే అంతరించిపోయింది కాబట్టి మీరు స్థాపించిన సత్యాగ్రహ సభ నుంచి నా పేరును ఉపసంహరించుకో గోరుతున్నాను. ధర్మం, సత్యం, అహింస, బ్రహ్మచర్యం లాంటి శాశ్వత విలువల ప్రచారానికి, ఆచరణకు ఒక సన్యాసిగా నేను చేయగల పనిని యథావిధిగా కొనసాగిస్తాను. రౌలట్ శాసనాల పట్ల నా వైఖరి ఇక ముందూ ఇలాగే ఉంటుంది. అమల్లోకి వచ్చినప్పుడు వాటిని ఉల్లంఘించటం నా ధార్మిక విధిగా నేను భావిస్తున్నాను. ఈ చట్టాలను రద్దు కావించటానికి నా సాధనను నేను సాగిస్తాను. ధర్మ ప్రబోధం పని తోబాటు ఈ కింది నిర్మాణ కార్యాలలోనూ నా సేవలు దేశవాసులకు ఎప్పుడూ అందుబాటులో ఉంటాయి:

1. హిందువులను, మహమ్మదీయులను, సిక్కులు, క్రైస్తవులు ఇత్యాదులను ఒక ఉమ్మడి వేదిక మీదికి తెచ్చి భారతీయ ఐక్యత సాధించటం. ఐక్య పంచాయతీల ద్వారా వారి మధ్య విభేదాలను సర్దుబాటు చేయటం.
2. స్వదేశీ ఉత్పత్తులకు ప్రాచుర్యం.
3. హిందుస్తానీని జాతీయ భాషగా ప్రవేశ పెట్టటం.
4. ఇప్పటి సర్కారీ యూనివర్సిటీ విధానానికి వేరుగా జాతీయ విద్యా విధానాన్ని అభివృద్ధి చేయటం.

[*Inside Congress*, Swami Shraddhanand, pp.99-97]

డా॥ మురళీధర్ రావు గారికి సన్మానము

ఆర్యసమాజ్ మహబూబ్‌నగర్‌కు ఎనలేని సేవలు అందించిన, సుదీర్ఘ కాలంగా ఆర్యసమాజానికి అధ్యక్షునిగా పని చేస్తు త్యాగమూర్తిగా నిలబడిన మహనీయుడైన డా॥ మురళీధర్ రావు గారికి గత 45 సం॥రాలు నుండి పేద-మధ్య తరగతి ప్రజలకు అందుబాటులో ఉండి ఎనలేని వైద్య సేవలు అందించి నందుకు తెలంగాణ రాష్ట్ర ప్రభుత్వము వారి సేవలను గుర్తించి జిల్లా ఉత్తమ డాక్టరుగా 15వ ఆగష్టు 2015 నాడు జిల్లా మంత్రి జూపల్లి కృష్ణారావు (భారిపరిశ్రమ మంత్రి) మరియు జిల్లా కలెక్టర్ శ్రీమతి టి.కె. శ్రీదేవి గారి చేతుల మీదగా అందుకున్నారు. అవార్డుతో పాటు రూ॥ 51,000/- నగదు బహుమతిని కూడ అందించారు.

డాక్టర్ మురళీధర్‌రావుకు సన్మానం

మహబూబ్‌నగర్ పట్టణంలోని రామమందిర్ చౌరస్తాలో దశాబ్దాల కాలంగా క్లీనిక్‌ను నడుపుతూ ప్రజాసేవే పరమావధిగా రోగులకు వైద్యసేవలు అందిస్తున్న డాక్టర్ మురళీధర్‌రావును సన్మానిస్తున్న మంత్రి జూపల్లి కృష్ణారావు, జిల్లా కలెక్టర్ శ్రీదేవి. ఈ సందర్భంగా నగదును, ప్రశంసాపత్రాన్ని అందించారు. చిత్రంలో టీఆర్ఎస్ నాయకులు విఠల్‌రావుఆర్యా ఉన్నారు. డాక్టర్‌గా వైద్యసేవలు అందించడమే కాకుండా ఆర్యసమాజ్‌లో అగ్రగణ్యుడుగా ఉంటూ వివిధ సామాజిక కార్యక్రమాలను కూడా మురళీధర్‌రావు నిర్వహించడం అభినందనీయం. ఈయన సేవలను తెలంగాణ ప్రభుత్వం గుర్తించడం పట్ల పలువురు హర్షం వ్యక్తం చేశారు.

శ్రావణ మాస వేద ప్రచారము

ఆర్య సమాజ్ న్యూబోయిన్‌పల్లి, సికింద్రాబాద్

1939లో వ్యవస్థాపిత శాఖ

1-9-137 & 138, పెద్దాతోకట్ట,
న్యూబోయిన్‌పల్లి, సికింద్రాబాద్, తెలంగాణ.

శ్రావణి వేదప్రచారం:

ఆగస్టు 14-08-2015 నుండి సెప్టెంబర్
13-09-2015 వరకు
ఉ॥ 6.00 గం॥ల నుండి ఉ॥ 7.00 గం॥ల వరకు

అందరూ ఆహ్వానితులే

ప్రధాన్	కోశాధికారి	కార్యదర్శి
శ్రీ వరుణ్‌రాజ్	శ్రీ అంజిరెడ్డి	శ్రీ బృహస్పతి

ఉప ప్రధాన్	సహాకార్యదర్శి
శ్రీ జయవీర్	శ్రీ వేదకుమార్

పూర్ణాహుతి

తేది:13-09-2015

ముఖ్య అతిథి : శ్రీ ప్రొ॥ విఠల్ రావు ఆర్య — పధాన్

శ్రీ హరికిషన్ వేదాలంకాం — మంత్రి

ప్రభుత్వం ప్రత్యేకంగా ప్రవేశపెట్టిన హరిత విప్లవంలో భాగముగా సభాధ్యక్షులు మరియు సభామంత్రి చేతుల మీదుగా మొక్కలు నాటెదము. వివరములకు సంప్రదించగలరు : 9652669732

श्रावण मास वेद प्रचार

आर्यसमाज न्यू बोइनपल्ली, सिकिन्द्राबाद, तेलंगाना

१९३९ में व्यवस्थापित शाखा

१-९-१३७, १३८ पेद्दा तोकट्टा
न्यू बोइनपल्ली, सिकिन्द्राबाद, तेलंगाना

श्रावणी वेदप्रचार

अगष्ट १४-०८-२०१५ से सेप्टंबर १३-०९-२०१५ तक
प्रातः ६.०० बजे से प्रातः ७.०० बजेतक

सभी लोग आमन्त्रित है

प्रधान	कोशाध्यक्ष	कार्यदर्शि
श्री वरुणराज	श्री अंजिरेड्डि	श्री बृहस्पति

उपप्रधान	सहकार्यदर्शि
श्री जयवीर	श्री वेदकुमार

विवरण के लिए सम्पर्क कीजिए — सेल : ९६५२६६९७३२

पूर्णाहुति

दिनांक : १३-०९-२०१५ के दिन रविवार होगा

इसके साथ साथ तेलंगाना सरकार द्वारा प्रवेश किए गए हरित विप्लव में सभा प्रधान श्री प्रो. विठ्ठलराव आर्य जी और सभा मंत्री श्री हरिकिशन वेदालंकार जी पौधे लगायेंगे और समयनुसार सरकारी मंत्री भी भाग लेंगे ।

श्रावणी मास में बृहद यज्ञों का आयोजन कर पौधा लगाएं

घर-घर में यज्ञ के आयोजन के साथ पौधा लगाने को प्रेरित करें

पेड़-पौधे जीवन का महत्वपूर्ण अंग है शुद्ध वायु और वर्षा के लिए महायज्ञों के साथ पेड़ लगाए

समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों, गुरुकुलों के संचालकों, शिक्षण संस्थाओं तथा युवा संगठनों से अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का आह्वान किया

एक पौधा लगाएं, क्योंकि...

50 साल में एक पेड़ हमारे इतने काम आता है

17.50 लाख रुपए की ऑक्सीजन का उत्पादन

41 लाख रुपए के पानी की रिसायक्लिंग।

300 पेड़ मिलकर खत्म कर सकते हैं एक वयस्क व्यक्ति द्वारा जीवन भर में फैलाए गए प्रदूषण को

35 लाख रुपए के वायु प्रदूषण का नियंत्रण

3% के लगभग तापमान कम करता है।

3 किलो कार्बनडायआक्साइड सोखता है हर साल

18 लाख रुपए के जमीन के कटाव खर्च पर रोक

7 औषधीय पौधे अवश्य लगाए
7 वृक्ष लगाकर जीवन का कर्ज चुकाए

छुट्टियों में यह भी कर लें : घूमने-फिरने तो आप जाते ही हैं। बस साथ में निम्बोली (नीम का फल), आम, जामुन या ऐसे ही बीज ले जाएं और रास्ते में जो जगह आपकी यादगार या पसंद की जगह हो वहां इन्हें फेंकते चलें। बारिश आएगी तब देखना कि आपके बीजों से वृक्ष और फिर वृक्षों से वन-जंगल समृद्ध होते जाएंगे।

hindkush.in से साभार

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् रत्न धातमम्।। १,१,१।।

पूर्ण रूप से हित करने वाले, यज्ञ के प्रकाश यज्ञ के प्रवर्तक, ऋतु के अनुसार यज्ञ करने वाले दिव्य विबुधो एवं ज्ञानियों को अपने पास बुलाने वाले रत्नों के धारण कराने वाले तेजस्वी अग्रणी (नेता) के गुणों का वर्णन करता हूँ।

वेद प्रचार सप्ताह

तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से श्रावण कृष्ण अमावास्या तक

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गत वर्ष कि भांति इस वर्ष भी वेद प्रचार सप्ताह तिथि श्रावण शुक्ल प्रतिपदा संवत् २०६९, तदनुसार १५ अगस्त २०१५ शनिवार से २९ अगस्त २०१५ शनिवार तक बडे समारोहपूर्वक सभी आर्य समाजों में मनाने का निश्चय किया गया है। इसका उद्देश्य मानवमात्र की परम पवित्र सत्यसनातन धर्म पुस्तक ऋग, यजु, साम एवं अथर्ववेद का आशामय संदे जनता तक पहुँचाना है जिससे जनता में वैदिक धर्म, आर्य-संस्कृति और आर्य सभ्यता की प्रगतिशील व्यवहारिकता के प्रति सक्रिय आकर्षण एवं रुचि उत्पन्न होकर वेदाध्ययन का प्रवचन, वैदिक जीवन का संचार तथा पवित्र वैदिक वातावरण का निर्माण हो सके। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि समस्त आर्यसमाजें कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पूर्ण प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम

सप्ताह का आरम्भ श्रावण मास की प्रतिपदा से आरम्भ होता है। सप्ताह भर का कार्यक्रम निम्न प्रकार मनाया जाना चाहिए।

१. श्रावणी-पर्व दिनांक २९ अगस्त २०१५ शनिवार को मनाया जाए। प्रत्येक आर्य परिवार में उस दिन सूर्योदय के समय परिवारिक यज्ञ हो।
२. पारिवारिक यज्ञ से निवृत्त होकर सब आर्य नर-नारी अपनी संतानो सहित ८-३० बजे आर्य समाज मन्दिर में उपस्थित हो। तत्पश्चात् आर्य पर्व पध्दति के पृ. ११ से ११६ पर्यंत (तृतीय संस्करण संवत् २०४१) लिखित तिथि से सम्पूर्ण पध्दति सम्पन्न कराई जाय। यज्ञ के पश्चात् वैदिक स्वाध्याय के महत्व पर किसी विद्‌वान का प्रवचन हो।
३. यदि वेद प्रचार का प्रबन्ध न हो सके तो समस्त आर्य नर-नारी यजुर्वेद ४० वे अध्याय का मिलकर अर्थ सहित पाठ करें।
४. उस दिन सब नर-नारी नूतन यज्ञोपवीत धारण करे जिन आर्य बालक-बालिकाओं का उपनयन नहीं हुआ हो तो इस पवित्र-पर्व पर उनका उपनयन संस्कार अवश्य सम्पन्न कराया जाय।
५. प्रत्येक मनुष्य को विधिपूर्वक वेदाध्ययन करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि वह अपने पडोस के अशिक्षित नर-नारियों को यज्ञोपवीत धारण करने की न केवल प्रेरणा दें अपितु आर्य समाज मन्दिर में अधिक -से-अधिक संख्या में उन्हे आमन्त्रित कर यज्ञोपवीत द्वारा उन्हे दीक्षित भी करे।

सप्ताह के शेष दिनों में

प्रातः समाज मन्दिर में विशेष यज्ञ और वेद पाठ का आयोजन किया जाए।
मध्याह्नः वेद प्रचार निधि में अधिक-से-अधिक धन इकट्ठा कर शीघ्र सभा कार्यलय को भेज दें।
रात्रि : समाज मन्दिर मे अन्य सार्वजनिक स्थानो में वेद कथाँए हो तथा आर्य समाज के नये सदस्य बनाए जाएँ। शुध्दि, दलितोध्दार, गौ-रक्षा एवं सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्या के सम्बन्ध में चर्चा कर कार्य किया जाए।

ऋषि भक्तों से विशेष निवेदन

प्राचीन आर्य परम्परानुसार यह वेद के श्रवण-श्रावण का मास है यदि पूरे मास नही तो सप्ताह भर ही क्यों न हो, प्रत्येक आर्य गृहस्थ को प्रतिदिन प्रातः सायं घर मे यज्ञ और वेदों में से चुने हुए कुछ मन्त्रों का अर्थ सहित पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन अग्नि रूप भगवान को साक्षी रखकर वेद धर्मानुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा करे। साथ ही वैदिक सिध्दान्तों के प्रचार का व्रत लें जिससे अडोस-पडोस के लोगो में वैदिक वातावरण का निर्माण हो।

यह व्रत और दीक्षा का दिन है। इस दीक्षा में सबको विशेष रूप से कटिबध्द होकर इसको उन्नत करने के उचित साधनों का संग्रह करना चाहिए और अपनी सभा को वेद प्रचार के लिए धन की चिन्ता से सदैव मुक्त रखना चाहिए। इसी में सबका कल्याण है। आर्य पुरुषों उठो, जागो और वेद ज्येति को सारे संसार में फैला दो। आर्य जनो संभलो, भामशाह की तरह अपने कर्तव्य को पहचानो और स्वयं तथा अन्यों से धन संग्रह करके शीघ्र सभा के कोष को भर दो। आर्य बन्धुओं मानव जीवन के अपने ऊपर चढे ऋग-बन्धनों को तोडने का यह उत्तम अवसर है। जाति की रक्षा का आप पर ऋग है और इस पवित्र दिन सब ऋगों से मुक्त होने का सक्रिय संकल्प कीजिए। आप पर सभा का भी ऋग है और इसे आपको ही उतारना है।

सभा कार्यलय में हिन्दी; अंग्रेजी, उर्दू तथा तेलुगु में आर्य-साहित्य उपलब्ध है। प्रत्येक आर्य को साहित्य खरीदना चाहिए तथा प्रत्येक आर्य समाज के पुस्तकालय में आर्य-साहित्य होना चाहिए। सभा की ओर से तेलुगु हिन्दी संस्कार विधि पंच महायज्ञ विधि छपाई गई है। हर एक आर्य बन्धु इस पुस्तक को अवश्य अपने पास रखे ताकि सभी संस्कार स्वयं करा सकें।

सभा की ओर से आर्य जीवन मासिक का प्रकाशन हो रहा है। आप स्वयं ग्राहक बनकर, औरों को भी ग्राहकबनाये। सभा द्वारा प्रचारार्थ भेजे गये विद्वानों को मार्ग व्यय आदि से सम्मानित करके ही आप विदा करे।

आशा है सदैव की भांति इस सभा के प्रति आपका स्नेह एवं सहयोग सदा बना रहेगा।

भवदीय

हरिकिशन वेदालंकार, मंत्री सभा — विट्ठलराव आर्य, एम.एस्सी. एल.एल.बी., प्रधान सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र, प्रदेश, महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दि. २९अगस्त २०१५ शनिवार के दिन मनाइए

हैदराबाद सत्याग्रह में अपने प्राणें की आहुति देने वाले आर्य वीरों की पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष सभा के आदेशों की पूर्ति तथा कर्तव्य पालन के उद्धेश्य से इस वर्ष श्रावण शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार शनिवार दिनांक २९ अगस्त २०१५ को प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में सत्याग्रह बलिदान दिवस मनाया जाएगा इसी दिन श्रावणी का पुण्य पर्व है। कार्यक्रम श्रावणी उपाकर्म के साथ मिलकर निम्न प्रकार मनाया जायगा। प्रातः ८.३० बजे आर्य समाज मन्दिर में नगर निवासियों को बड़ी संख्य में आमन्त्रित करके यज्ञादि किये जाएँ। उपाकर्म-कार्यक्रम के पश्चात व्याख्यान आदि का विशेष प्रबन्ध किया जाए तथा उपस्थित सब भद्र पुरुष एवं देविया सम्मिलित रूप से निम्न प्रकार मन्त्रों का पाठ करें।

१. ओ३म् ऋतावान् ऋतजाता ऋकोवृधो घोरासो अनृतद्विष। तेषां वसुम्ने सुच्छर्दिष्टिमे नमः स्याम वे च सुरयः।। ऋग्वेद ७,६६,१३

२. ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्। इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। यजुर्वेद २, ५

३. ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपध्नन्तो अराह्णः।। ऋग्वेद १,६३,५

४. ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्या अस्मभ्य सन्तु पृथिवी प्रसूताः। दीर्घ न आयु प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलह्यतः स्याम।। ऋग्वेद १,६३,५

१. आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् उपर्युक्त मत्रों का तात्पर्य इन शब्दों में पढ़कर प्रार्थना करायें। जो विद्वान सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृध्दि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं उनके सुखदायक आश्रय से हम सब सदा सुखी रहें और हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

२. हे ज्ञानस्वरूप सब उत्तम संकल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर हम भी आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसको पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान कीजिए जिससे कि उस व्रत को ग्रहण करने से हमारी सब ओर से उन्नति हो। वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य को ही आचरण में लावें। आप हमें शक्ति दें ताकि हम अपने जीवन को पूर्ण सत्यमय बना सकें।

३. हे मनुष्यों तुम सब आत्मिक शक्ति तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए कर्मनिष्ठ बनकर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी धर्मात्म बनो और बनाओ।

४. हे प्रिय मातृभूमि हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियाँ तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। हम सर्वथा निरोगी, स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए दीर्घ आयु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर हम अपने प्राणों की बलि देने को भी तत्पर रहें।

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धांजलि

श्रध्दांजलि अर्पण करते हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान।।
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किये पर, धर्म न छोड़ा वीरों ने।।
ऐसे सभी धर्मवीरों के, आगे शीष झुकाते हैं।
उनके गुण-कर्मों को हम, निज जीवन में अपनाते हैं।।
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनाएगा फिर, वीर जाति को निश्चय से।।
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि-कोटि हों ऐसे वीर।
देश धर्म हित खुशी-खुशी, जो प्राणों को अपने दे वीर।।
जगतपिता को साक्षी रख कर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिह्न पर, चलने का व्रत धरते हैं।।
सर्व शक्तिमय दे बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बने।
पर उपकार परायण निशिदिन, शुभ गुणधारी आर्य बनें।।

धर्मवीर नामावली

श्यामलालजी, महादेवजी रामाजी श्री परमानन्द।
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द।।
स्वामी सत्यानन्द महाशय, मलखना श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश, रामनाथजी, पाण्डुरंग, श्री शान्ति प्रकाश।।
पुरुषोत्तमजी ज्ञानी, लक्ष्मणराव, सुनहरा वेंकटराव।
भक्त अरोड़ा, नाथुरामजो, नन्हूसिंह, श्री गोविन्दराव।
मदनसिंहजी, रतिरामजी, शिवचन्द्र, सदाशिव, ताराचन्द्र।
श्रीयुत छोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीरचन्द।।
माणिकराव, भीमरावजी, महादेवजी, अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण, वैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द नरसिंह।।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही धीरों वीरों का।।

भवदीय

विट्ठलराव आर्य एम.एससी., एलएल.बी., प्रधान सभा

हरिकिशन वेदालंकार मंत्री सभा

आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.-तेलंगाना महर्षि दयानन्द मार्ग, सुलतान बाजार, हैदराबाद - ५०० ०९५

ఆహ్వానము

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆం.ప్ర. తెలంగాణ

మహర్షి దయానందమార్గము, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాద్ అధ్వర్యంలో

ఆర్యసమాజము ఆర. పీ. రోడ, సికంద్రాబాద్

సౌజన్యంతో

జంటనగరాల ఆర్య సమాజముల

సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము

మరియు

ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినము

తేది: 29-8-2015 శనివారము ఉ॥ **9-00** గం॥ల నుండి

ఆర్య ప్రతినిది సభ ఆం.ప్ర.-తెలంగాణ మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్ హైద్రాబాద్ ఆధ్వర్యంలో ఆర్యసమాజము ఆర. పీ. రోడ, సికంద్రాబాద్ **వారి సౌజన్యంతో** జంటనగరాల ఆర్య సమాజాల సామూహిక శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము మరియు ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినము (శ్రావణి పూర్ణిమ) తేది 29-8-2015 శనివారము నాడు నిర్వహించబడును కావున ఆర్య బంధువులందరిని కుటుంబ సమేతంగా సాదరముగా ఆహ్వానిస్తున్నాము. అధిక సంఖ్యలో పాల్గొని కార్యక్రమమును జయప్రదము చేయగలరని మనవి. ఈ కార్యక్రమములో స్వామి శ్రాద్ధానంద్ గారి గురించి తెలుగులో ఎం.వి.ఆర్. శాస్త్రి గారు ద్వారా రాసిన పుస్తక సందర్భములో శాస్త్రి గారికి సన్మానము చేయబడును. ఈ కార్యక్రమంలో విశిష్ట అతిథులుగా శ్రీ పొత్తూరి వెంకటేశ్వర్ రావు గారు, శ్రీ బి. నర్సింగ్ రావు గారు, శ్రీ సి.హెచ్. రాజేశ్వర్ రావు గారు మరియు శ్రీ యం.వి.ఆర్. శాస్త్రి గారు ఆహ్వానింపబడినారు. ఆర్య సత్యగ్రహ అమరవీరులకు మరియు నైజాం కాలములో అమరులైన వీరులకు శ్రద్ధాంజలి ఘటించెదము కావున తామెల్లరు సకుటుంబముగా విచ్చేసి కార్యక్రమమును జయప్రదము చేయగలరని మనవి.

యజ్ఞబ్రహ	: గౌ॥ ఆచార్య వసుధాశాస్త్రి గారు,
	ఆచార్య అరవింద శాస్త్రిగారు,
	: గౌ॥ ప్రియదత్త గారు
ముఖ్య అతిథి	: పొత్తూరి వెంకటేశ్వర్ రావు గారు,
	శ్రీ బి. నర్సింగ్ రావు గారు,
	శ్రీ సి.హెచ్. రాజేశ్వర్ రావు గారు
	శ్రీ యం.వి.ఆర్. శాస్త్రి గారు
అధ్యక్షత	: గౌ॥ విఠ్ఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ
విధ్వాంసులు	: డా॥ టి.వి. నారాయణ గారు, ఉపప్రధాన్
	: శ్రీ హరికిషన్ వేదా లంకార్, మంత్రి
సంయోజకులు	: శ్రీ లక్ష్మణ్ సింగ్ గారు
	ఉప ప్రధాన్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ
భజన్	: భజన్ మండలి
వందన సమర్పణ	: ఆర్యసమాజము ఆర్.పి. రోడ్, సికింద్రాబాద్

భవదీయులు

ప్రధాన్ మంత్రి	ప్రధాన్ మంత్రి
ఆర్యసమాజము, ఆర్.పి. రోడ్, సికింద్రాబాద్.	ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ

निमंत्रण

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.- तेलंगाना

के तत्वावधान मे

आर्य समाज आर. पी. रोड, सिकंदराबाद के सौजन्य से

नगर द्वय की आर्य समाजों का

सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं

आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दिनांक : २९-०८-२०१५ शनिवार

प्रातः ९-०० बजे से

स्थान : आर्य समाज आर.पी. रोड, विद्यालय प्रांगण

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना, हैदराबाद के तत्वावधान में आर्य समाज आर.पी. रोड, सिकंदराबाद के सौजन्य से नगर द्वय की आर्य समाजों का सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक : २९-०८-२०१५ शनिवार के दिन आर्य समाज आर.पी. रोड, विद्यालय प्रांगण मनाया जा रहा है। सभी आर्य बन्धु सपरिवार पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्दजी पर तेलुगु में श्री एम.वी.आर. शास्त्री जी द्वारा लिखि गई पुस्तक के संदर्भ में श्री शास्त्रीजी का सम्मान किया जाएगा । इस अवसर पर आर्य सत्यग्राह एवं निजाम के काल के अत्याचारों का डट कर विरोध करने वाले शहिदों को श्रद्धांजलि दी जाएगी । इसमें श्री पोत्तुरी वेंकटेश्वर रावजी, श्री बी. नर्सिंग राव जी, श्री सी.एच. राजेश्वर रावजी एवं वैदिक विद्वान आमंत्रित है।

यज्ञ ब्रह्मा	: आचार्या वसुधा शास्त्री जी,
	: आचार्य अरविंद शास्त्री जी
	: श्री प्रियव्रत शास्त्री जी
मुख्य अतिथि	: श्री पोत्तुरी वेंकटेश्वर रावजी,
	श्री बी. नर्सिंग राव जी,
	श्री सी.एच. राजेश्वर रावजी,
	श्री एम.वी.आर. शास्त्रीजी
अध्यक्षता	: श्री विट्ठलराव आर्य प्रधान सभा
भाग लेने वाले विद्वान	: डॉ. टी.वी. नारायण जी, उप प्रधान सभा
	: श्री हरिकिशनजी वेदालंकार मंत्री सभा
संयोजक	: श्री लक्ष्मण सिंह जी उप प्रधान सभा
भजन	: भजन मंडली
धन्यवाद	: आर्यसमाज, आर.पी. रोड, सिकंदराबाद

भवदीय

प्रधान मंत्री	प्रधान मंत्री
आर्य समाज	आर्य प्रतिनिधि सभा
आर.पी. रोड सिकंदराबाद,	**सुल्तान बाजार, हैद्राबाद**

वीतराग आर्य संन्यासी श्रद्धेय स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में सार्वदेशिक सभा के सभागार में दिनांक 9 अगस्त, 2015 को अपरान्ह 3 से 5 बजे तक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता तथा सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान वैद्य इन्द्रदेव जी ने की तथा संचालन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य तथा उपप्रधान डॉ. अनिल आर्य ने संयुक्त रूप से किया। ज्ञातव्य हो कि स्वामी सुमेधानन्द जी का 5 अगस्त, 2015 को रात्रि में निधन हो गया था।

अलौकिक आत्मा तथा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी स्वामी सुमेधानन्द जी को श्रद्धांजलि देने तथा उनके जीवन से प्रेरणा लेने के लिए भारी संख्या में आर्यजन सभागार में उपस्थित थे। इस श्रद्धांजलि सभा को सर्वश्री प्रो. विट्ठलराव आर्य सभा मंत्री, स्वामी श्रद्धानन्द जी (पलवल), प्रेम पाल शास्त्री (शक्तिनगर, दिल्ली), डॉ. अनिल आर्य, डॉ. महेश विद्यालंकार, श्री मधुर प्रकाश शास्त्री, राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी, पं. माया प्रकाश त्यागी सभा कोषाध्यक्ष, बहन प्रवेश आर्या, भद्रकाम वर्णी, विद्यासागर वर्मा (पूर्व राजदूत कज़ाकिस्तान), दर्शन अग्निहोत्री, नफे सिंह देशवाल (प्रधान आर्य समाज देवनगर), मेघश्याम शास्त्री, रविन्द्र मेहता, ओम सपरा (उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान), प्रवीण आर्य, अभयदेव शास्त्री पुरोहित सभा के अध्यक्ष, बलजीत सिंह आदित्य -मंत्री दिल्ली सभा, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य (प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा), डॉ. धर्मवीर, अशोक गुलाटी (नोएडा), अर्पित आर्य, श्याम लाल (बागेश्वर, उत्तराखण्ड), महेन्द्र भाई, स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती तथा वैद्य इन्द्रदेव जी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों ने दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके ऊर्जावान जीवन से प्रेरणा ग्रहण करने की बात कही। इस अवसर पर विभिन्न संगठनों तथा आर्य समाजों से शोक संदेश भी प्राप्त हुए जिन्हें सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने पढ़कर सुनाया।

इस अवसर पर स्वामी जी को स्नेहिल श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सार्वदेशिक सभा के मंत्री **प्रो. विट्ठलराव आर्य** ने कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी एक दिव्य और महान आत्मा थे और समाज का समुत्थान करने के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। उनकी विद्वता, व्यक्तित्व और कृतित्व अनोखा था जिसकी मिसाल मिलना कठिन है। उन्होंने अपने सत्संस्मरण सुनाते हुए कहा कि स्वामी जी का मेरे ऊपर अपार स्नेह था और मेरे आमन्त्रण पर वे अस्वस्थ होते हुए भी चम्बा से इतनी लम्बी यात्रा करके हैदराबाद सम्मेलन में पहुंचे थे और सम्मेलन को सफल बनाने के लिए दिशा-निर्देश प्रदान किये थे। सम्मेलन के उपरान्त विरक्त मण्डल का गठन और उसका अध्यक्ष स्वामी सुमेधानन्द जी को बनाना एक ऐतिहासिक घटना थी और उन्होंने अपनी इस जिम्मेदारी को अत्यन्त निष्ठा और परिश्रम से निभाया तथा आर्य समाज को मजबूत करने के लिए हमेशा तत्पर रहे। उन्होंने कहा कि राजनीति में भाग लेना उनकी प्रमुखता में था। आर्य राष्ट्र निर्माण के उनके स्वप्न को पूरा करना अब हम सबकी जिम्मेदारी है। उन्होंने आर्य समाज में बढ़ते विवादों को समाप्त करने के लिए बहुत प्रयास किये। आज इस अवसर पर हम सबको संकल्प लेना है कि उनके स्वप्नों को साकार करें यही उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष **पं. माया प्रकाश त्यागी जी** ने स्वामी सुमेधानन्द जी को ओजस्वी वक्ता, समाजसेवी,

त्याग और परोपकार की भावना से ओतप्रोत उदार हृदय का महान व्यक्ति बताया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी में विनम्रता कूट-कूट कर भरी हुई थी, वे सिवाय आर्य समाज के दूसरी बात सोचते ही नहीं थे। एक संन्यासी के समस्त गुण उनमें विद्यमान थे। उनका निधन आर्य समाज के ऊपर बज्रपात है। उनकी पुण्य स्मृति को मेरी विनम्र श्रद्धांजलि।

पलवल से पधारे **स्वामी श्रद्धानन्द जी** ने कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी का देहावसान हम सबके लिए दुखद घटना है। उन्होंने कहा कि उनका सारा जीवन अत्यन्त प्रेरणादायक है। उन्होंने वैदिक विरक्त मण्डल के माध्यम से अत्यन्त सराहनीय कार्य किये हैं। स्वामी जी ने कहा कि उनका मान-सम्मान सारे देश में था। वे सबके प्रिय थे। वे कुशल संगठनकर्ता थे, दूरदर्शी थे, पुरुषार्थी थे। उनका आर्य समाज का राजनीति में आने का स्वप्न हम सबको पूर्ण करना चाहिए। उन्होंने आजीवन क्रियाशील रहकर आर्य समाज में अत्यन्त उच्च स्थान प्राप्त किया था। आर्य समाज की अनोखी विभूति को मैं नमन करता हूँ तथा अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

वीतराग आर्य संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी को दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में श्रद्धांजलि सभा का किया गया आयोजन

गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी सुमेधानन्द जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा ग्रहण करने का किया आह्वान

स्वामी सुमेधानन्द एक दिव्य और महान आत्मा थे
- प्रो. विट्ठलराव आर्य

स्वामी सुमेधानन्द जी का निधन आर्य समाज के ऊपर बज्रपात है
- पं. माया प्रकाश त्यागी

स्वामी जी ओजस्वी, वर्चस्वी, तेजस्वी और मनस्वी संन्यासी थे
- वैद्य इन्द्रदेव

स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती शिरोमणि संन्यासी थे
- डॉ. अनिल आर्य

सार्वदेशिक सभा के सभागार में दिनांक 9 अगस्त, 2015 को स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए व्यथित आर्यजन

स्वामी सुमेधानन्दजी की स्मृति में

दयानन्द मठ चम्बा में शान्ति यज्ञ और श्रद्धान्जलि सभा

सार्वदेशिक सभा की ओर से सभा के महामन्त्री
प्रो. विट्ठल राव आर्य ने
स्वामीजी को भावभिनि श्रद्धान्जलि अर्पित की
सांसद स्वामी सुमेधानन्दजी सीकर, कु. पूनम आर्यजी, ओमप्रकाशजी अमृतसर, डॉ. एस.के. शर्मा डी.ए.वि. प्रबन्ध की ओर से, प्रो. स्वतन्त्रकुमारजी, श्री धरमपालजी दिल्ली व प्रतिनिधि सभाओं के अन्य अधिकारियों ने श्रद्धान्जलि अर्पित की ।
स्वामी सदानन्दजी ने आचार्य महावीरजी को अगला उत्तराधिकारी घोषित किया । सभा में स्वामीजी की सेवाओं की भूरी भूरी प्रशंसा की गयी ।

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

आर्य जीवन 18-08-2015 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, D.No. 4-2-15
మహర్షి దయానంద మార్గము సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95,
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946
సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య ప్రధాన్ సభ

सभा के नए प्रकाशन

सामूहिक श्रावणी उपाकर्म पर्व

एवं

आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

के अवसर पर

वैदिक नित्य कर्म विधि

और

संस्कार विधि

पुस्तक विमोचन समारोह
दिनांक : २९-०८-२०१५ शनिवार

प्रातः ९-०० बजे से

स्थान : आर्य समाज आर.पी. रोड, विद्यालय प्रांगण

मुख्य वक्ता : श्री पोत्तुरी वेंकटेश्वर रावजी,
डॉ. टी.वी. नारायण जी,
अध्यक्षता श्री विठ्ठल राव जी प्रधान सभा
संयोजक श्री हरिकिशन वेदालंकार जी मंत्री सभा
इसी अवसर पर आर्य समाज के महानेता एवं तपस्वी संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती पर तेलुगु में श्री एम.वी.आर. शास्त्री जी द्वारा लिखि गई पुस्तक के सन्दर्भ में

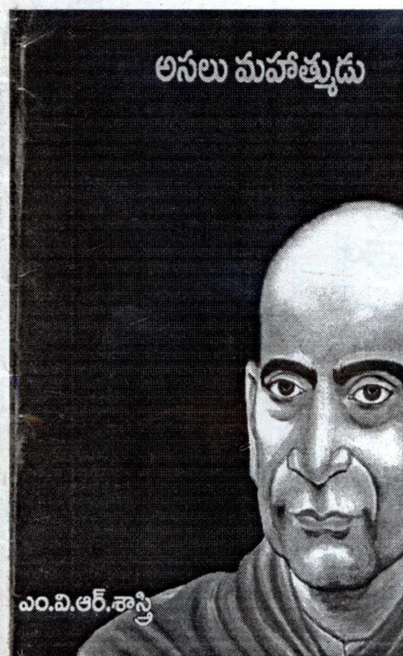

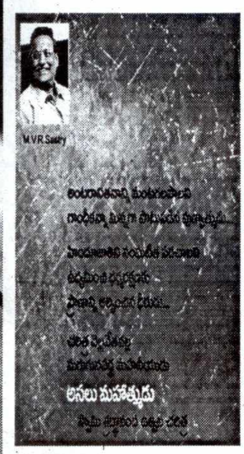

श्री एम.वी.आर. शास्त्री जी का सम्मान समारोह

इस अवसर पर आर्य सत्यग्राह एवं निजाम के काल के अत्याचारों का डट कर विरोध करनें वाले शहिदों को श्रद्धांजलि भी दी जाएगी अतः सभी आर्य बन्धु सपरिवार पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

भवदीय

हरिकिशन वेदालंकार **विठ्ठलराव आर्य**
मंत्री

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR
Editor: VithalRao Arya • acharyavithal@gmail.com

సంపాదకులు : విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్ ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95 Ph.No. 24753827,Email : acharyavithal@gmail.com
संपादकः श्री विठ्ठल राव आर्य प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया।
प्रकाशकः आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-९५